ARCHANA

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. अर्चना कैसे करूँ मैं। 1

2. मैं तुम्हें पुकारुँ न आओ। 2

3. मेरे अन्तस में बस जाओ। 2 4. हरि भज हरि भज हरि भज मन तू 3 5. भटकूँ चहुँ दिश ठौर न पावे। 3

6. मेरा मन उलझ उलझ जाता। 4

7. टूट गया है यह सारा तन। 4

8. तुम मुझसे आँखे मत मूंदो। 5

9. हो सका ना तृप्त जग में। 5

10. आँसू की कीमत जानो क्या। 6

11 . नयना मेरे रिमझिम बरसे। 6

12. रो रोकर बीत गया जीवन । 7

13. व्यग्रता सब खो गई है। 7

14. बनना मिटना खेल यहाँ हैं। 8

15. भक्त कहे हम किसे जगत में। 8

16. किसकी ऑखें करे प्रतीक्षा। 9

17. हो जगत के ईश तुम तो। 9

18. तुम आओ या ना आओ अब। 10

19. कुछ गम लिये कुछ गम दिये। 10

20. आशाओं की गठरी लेकर। 11

21. लिख-लिख शब्द करूँ मैं रचना। 11

22. साथ तुम्हारा रहा नहीं अब। 12

23. बन्शी धुन उस पार बजाता। 12

27. चल उड़ चल उस पार गगन के। 14

28. कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे। 15

29. मन गा ले आज खुशी से तू। 15

30. किस जगह तुम को पुकारुँ। 16

31. लिख लिख भेजूँ तुमको पाती। 16

32. सर्वत्र तू है व्यापक। 17

33. खोजूँ तुमको खोज न पाऊँ। 17

34. मैं रोया आँसू ना देखे। 18

35. उठे विरह के गीत नयन पर। 18

36. कल्पना में जी रहे है। 19

37. तुमको नमस्कार करते है। 19

38. सागर है मुझको बुला रहा। 20

39. ढूँढ रहा हूँ बना बाबला। 20

40. अपनाने को क्या यह जीवन। 21

41. ढलती जाती शाम यहॉ है। 21

42. जीवन की तज अभिलाषायें। 22

43. अँखियाँ मेरी झर झर बरसे। 22

44. निज दीप तू उर में जला ले। 23

45. कर रहे हैं हम प्रतीक्षा। 23

46. साथ रही है सदा उदासी। 24

47. अँधियारे में कुछ न दीखें। 24

48. गठरिया पाप की शीश धरी। 25

49. सूना तुम बिन सब लागे है। 25

50. ईश्वर तुम हमें करो क्षमा। 26

51. रोई अंखियाँ तू न आया। 2652. हम विलख रहे सन्तान तेरी। 27

53. चल उड़ चल उस पार गगन के। 27

54. तू देख मनुआ देख ले। 28

55. हे ईश न मुझ से तुम रूठो। 28

56. पा सके नहीं हे ईश तुझे। 29

57. क्या कहें तुम्हें यह दिल टूटा। 29

58. हे ईश हमें तुम पथ दे दो। 30

59. हे ईश क्षमा करना हम को। 30

60. मन नहीं लगता यहाँ पर। 31

61. जन्म भी तू मृत्यु भी तू। 31

62. तेरे बिना जियरा न लागे। 32

63. हम जख्म यह किसको दिखायें। 32

64. कल क्या होगा न जान सकें। 33

65. सजे यहाँ चाहत के मेले। 33

66. सुख खोज रहा है यह मनुआ। 34

67. अपनी अपनी चाहत सबकी। 34

68. हम हैं अबल सबल तुम स्वामी। 35

69. चल उड़ चल उस पार गगन के 35

70. तड़फ रहे देखे ना बोले। 36

71. बहते आँसू देख हमारे। 36

72. सब सोवें मो नींद न आवे। 37

73. कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे। 37

74. कितना चले मगर न पहुँचे। 38

75. सब को मिलता है नहीं श्रोत। 38

76. मन्द बुद्धि अज्ञानी हम हैं। 39

77. किसके आगे व्यथा सुनायें। 3978. रूक मत समझ यहां बहता जा। 40

79. तुम विमुख हुए हम टूट गये। 40

80. कितना ही नाम जपेंगे। 41

81. किसको पकड़ें किसको छोड़े। 41

82. टप टप गिरें नयन से आँसू। 42

83. अपनी अपनी लिये कहानी। 42

84. लगता नहीं यह दिल। 43

85. खोज रहे क्या बने बाबले। 43

86. हाथ जोड़ कर करूँ अर्चना। 44

87. हरि तुम छोड़ कहाँ पर जाऊँ। 44

88. हे ईश क्षमा करना हमको 45

89. प्रभु मैं भटकता फिर रहा हूँ। 45

90. जन्म दिया तूने हमको जो। 46

91. शक्तिमान हो इस दुनिया में। 46

92. मन्दिर मस्जिद गिरजा ढूंढा। 47

93. हरि अब चरण पड़ूं मैं तेरे। 47

94. विनती सुन लो हरि तुम प्यारे। 48

95. चरण पड़ूं मैं दास तुम्हारा। 48

96. मेरे राम तुम को ही जपे। 49

97. जय हो ईश सदा तुम्हारी। 49

98. यहाँ भज ले मनुआ राम। 50 99. हरि तुम राखो लाज हमारी। 50

100. हरि मेरे हिय में बस जाओ। 51

101. अर्चना तेरी करें हम। 51

ARCHANA

1

अर्चना कैसे करूँ मैं, पास में कुछ भी नहीं।

बन सकता बाती तेरी, भाग्य क्या मेरा नहीं।

चाह थी बाती बनूं मैं, बन दीपक मैं जलता।

मैं कहां जाऊं जगत में, मुझको मग न दिखता।

पाप क्या है पुण्य क्या है, जानता मैं कुछ नहीं।

अर्चना के ूल सूखे, क्या मिलोगे तुम नहीं।

चीखता चिल्ला रहा मैं, अंधोरे में भटकता।

अभागा मैं भाग्य से हूँ, कैसे पूजा करता ?

नयन से दो नीर गिरते, वह कथा सृजन करते।

इस कलेजे में चुभन दे, कौन सा छन्द रचते ?

तुम करुणा का भिखारी, बैठ दर पर रो रहा।

डूब भी तुझमें सका ना, बेबसी को कह रहा।

कौन जाने कब गिरे हम, हाय कैसी घुटन है ?

चल रहे बस चल रहे है, पूछता व्योम चुप है।

प्यार के दो गीत गा कर, ना सके तुमको रिझा।

आँख के यह अश्रु सूखे, विनय है पथ को सुझा।

आँसूओं को देख कर भी, ना धारा विचलित हुई।

जीवन जिया ना जी सका, कैसी नियति यह हुई।

तुझ चरण मिलते मुझे तो, अश्रुओं से सीचंता।

क्या गुनाह मेरा बोलो, छिप गया क्यों पूछता ?

कौन सा जीवन प्रयोजन, तुम बिना इस जगत में।

BY CHANDRA PRABHAKAR

तेरे पग की रज चाहूँ, प्यार में मिटूँ तुझ में।

ढुलकते आंसू हमारे, वंचित चरण से सदा।

अबल हम है तुम सबल हो, अज्ञान पूरित सदा।

अर्चना मेरी अधूरी, थाल में दीपक नहीं।

गिर रहा हूँ गर्त में मैं, थाम लो विनती यही।

2

मैं तुम्हे पुकारुँ न आओ, काहे को यह खेल रचाओ ?

शून्य-शून्य बन कर रहते, काहे फिर यह सांग रचाओ ?

जन्म-मृत्यु का खेल रचाया, इसमें कौन मजा सा आया ?

सुख-दुख की इस लीला को रच, कैसा यह संसार बनाया ?

जल-थल-नभ सब जगह तुम्ही हो, सभी जगह राज्य तुम्हारा।

हर सांसों में गूंज रहे हो, फिर भी पीड़ित है जग सारा।

हे दीनबन्धु तुम कृपा करो, हम सब तो हैं तेरे बालक।

जीवन के तुम्हीं खिवैया हो, और तुम्हीं हमारे हो रक्षक।

मैं कहाँ-कहाँ जी बहलाता, मन मेरा है उड़-उड़ जाता।

तुम्हीं बता दो जाऊँ कहाँ, जी में कुछ भी समझ न आता।

जीवन की अन्तिम सांसों तक, बस रहूँ समर्पित तुझमें ही।

बस इतना मुझको सम्बल दो, मिट सकूँ डगर पर तेरी ही।

3

मेरे अन्तस में बस जाओ, मुझको खूब रुलाओ।

मेरी सुधि को हरि ले लो तुम, मोहि नहीं विसराओ।

निशदिन देखूं बाट तुम्हारी, ऐसी ज्योति जगाओ।

छिपे कहाँ वंशीधार तुम हो, अपनी वंशी बजाओ।

जीने का संग्राम छिड़ा यहाँ, इससे मुझे बचाओ।

मेरे सब अरमान मिटे हैं, अपनी शरण लगाओ।

तुम बिन काहे मैं जीता हूँ, बिछड़ो ना आ जाओ।

तुम बिन नैना नित-नित रोवे, पागल प्रीति बढ़ाओ।

तुम बिन जग में कुछ नहीं भावे, तुम अब तो आ जाओ।

भटक-भटक मन यह हरि जावे, और नहीं भटकाओ।

जीवन क्यों है समझ न आवे, मतलब कुछ समझाओ।

यह विनती मेरी तुम सुन लो, हरि मोहि न विसराओ।

4

हरि भज हरि भज हरि भज मन तू, वह छिपा हुआ मन जप ले तू। जग में भटका चैन मिला ना, मन बसा हरी इस दिल में तू। सारा जग पागल है धोखा, हरि बिन पार न होवे नौका। बैचेन न हो जीवन थोड़ा, मान ले मन दे उसे मौका।

वह आदि अन्त सबका स्वामी, वह ही सब जग का है दानी। जाये कहाँ पागल तज उसे, हरि चरण चढ़ा नयना पानी। जीवन थोड़ा हरि संग गुजार, उसके ही संग बहती बहार। सिर द्वार उसी के रख दे तू, दे न दे मर्जी उसकी प्यार।

हरि भज ले शान्ति छिपी इसमें, जग के टूटे सारे सुपने। हारे को हरि का नाम यहाँ, बल कितना मन क्यों ना माने। बन दास हरी का कटे रूर, बहता जा बन कर यहाँ लहर। कुछ हाथ नहीं सब कुछ उसका, फिर भी पागल बन करे रूर।

5

भटकूँ चहुँ दिश ठौर न पावे, धीरज मोहि कौन बंधावे ?

ीके लगते जग आकर्षण, तू अब मोहि काहे सतावे ?

बहते नयना पीठ करी क्यों, पल-पल में हम तुझको रटते।

निर्मोही बन मुझको छलते, कैसे कहूँ शब्द न बनते।

सुधि ले लो असहाय हुए है, सम्बल सारे टूट गये हैं।

गिर-गिर कर मैं चलता पथ पर, पग यह मेरे शून्य हुए है।

पी-पी रटे पी नहीं आवे, कैसे हम मन को समझावे ?

बही जा रही यह तो गंगा, अब अपने में तुही समावे।

अँखियों से बरसात बरसती, पी के आने को वह तकती।

फिर भी वैरी वह ना आवे, करुँ समर्पण आशा तकती।

खूब रुलाओ मैं भी रोऊँ, रोने में आनन्द मनाऊँ।

इससे वंचित मत कर देना, सब निधियां मैं इसमें पाऊँ।

6

मेरा मन उलझ-उलझ जाता, कहिं ठौर नहीं है यह पाता।

चरणों में तेरे हे गोविन्द, क्यों नहीं हाय यह रुक पाता ?

बिसर-बिसर तुझ पथ से जाऊँ, लोभी मैं जग का कहलाऊँ।

हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, तुझ दर तक मैं कैसे आऊँ।

बैचेन रहा जग में आया, तुमसे नाता जोड़ न पाया।

भ्रमित हुआ सा घूम रहा मैं, जीवन अपना व्यर्थ बिताया।

कुछ ना समझा कुछ ना जाना, बना हुआ बस मैं दीवाना।

आँसू सूखे मरुस्थल में, बता गीत का अब क्या होना ?

चला रहे तुम सकल विश्व को, बोझा तुम पर है अति भारी।

देख रहा खोया सा निज को, सकल बुि) है मेरी हारी।

करुणामय-करुणा तुम कर दो, अपने चरणों की रज दे दो।

रो लू सिसक-सिसक कर बस मैं, इतना ही वर मुझको दे दो।

7

टूट गया है यह सारा तन, उठने की सामर्थ नहीं है।

जग पर बोझ हुआ सा लगता, जीवन की सब खुशी बुझी है।

चलते-चलते थक गिर जाते, क्या जीवन का खेल बनाया ?

इच्छाओं की गठरी ले कर, चलता रहा सदा भरमाया।

आँख मिचौनी खेल-खेल कर, रहे नचाते जीवन भर तुम।

बहक-बहक इस जग में घूमा, रहे विलग क्यों जीवनभर तुम।

कर्म किये ?ल जान न पाया, मतलब अलग-अलग समझाया।

मूर्ख बना जीवन भर घूमा, तेरे दर पर मूर्ख ही आया।

नहीं मिले इस पार जगत में, उस पार पता ना क्या होगा ?

धाक-धाक यह दिल कांप रहा है, तुमसे मिलना प्रभु कब होगा ?

भूल मेरी क्या नहीं जानता, क्षमा कर तुम प्यार से देखों।

कृपा दृष्टि तुम अपनी दे दो, रोती आँखें मेरी देखो।

8

तुम मुझसे आँखें मत मूंदों, जग पालक हे जगदीश्वर।

करुणा का मैं हुआ भिखारी, अनजाने मग का ईश्वर।

यह झर-झर आंसू गिरते हैं, बोलो इनका मोल नहीं।

तुझ बिन सूनी लगती दुनिया, जीवन में अब जोश नहीं।

सूखा पत्ता हुआ डाल का, इधार-उधार गिर पड़ता हूँ।

किससे जग में करें शिकायत, गिर उठ कर रो लेता हूँ।

मन्दबुि) अज्ञानी मैं हूँ, तुमसे ही वर ले आया।

क्यों मेरा उपहास उड़ाओ, बंधो नियम से चल आया।

संजो-संजो कर मीठे सपने, जीवन सारा काट दिया।

रहा तरसता एक बूंद को, अमी न मुझको सुलभ हुआ।

रहे गीत हम गाते तेरे, इसी खेल को खेले चल।

इसी आस में जी लेंगे हम, दिल तेरा कब जाये पिघल।

9

हो सका ना तृप्त जग में, उस पार को ना जानता।

क्यों मन नहीं लगता यहाँ, उस पार उड़ना चाहता।

यह कदम तो है बहकते, खामोश दिल यह रो रहा।

थाम लो हम रूर मेरे, ना मोह जीवन से रहा।

सूनी-सूनी आँखे है, सब ओर रेगिस्तान है।

ऐसे में जाऊँ कहाँ मैं, दिन भी काली रात है।

मैं ज्ञान से वंचित रहा, पथ में भटकता ही रहा।

कौन सी थी प्यास मैं जो, लेकर सदा चलता रहा।

तुम न होते मीत मेरे, कौन दुआयें मांगता ?

जिन्दगी लुटती रही पर, कुछ नहीं मैं बोलता।

प्यार के दो गीत सुनने, को तरसता यह मन रहा।

मैं कहाँ जाऊँ भटकता, ये मन रुदन करता रहा।

10

आंसू की कीमत जानो क्या, बेमौल ढुलकते ढर-ढर है।

अपनी दुनिया में तुम खोए, ना तुमको हमसे मतलब है।

हम अपने मन को बहलाते, तुम कहते हम सुपने बुनते।

पीड़ाओं से दिल जख्मी है, तुम कहते फिर क्यों ना रोते ?

टकटकी लगा कर देख रहे, नम आँखें नहीं हुई तेरी।

जग के आंगन में डोल रहा, क्या तेरी मेरी मजबूरी।

चल गा ले संग मेरे भगवन, हम भुला सके अपने कुछ गम।

तेरे नयनों में झांक रहा, सब बीत रहा मेरे भगवन।

गिर-गिर के चलते रहे यहाँ, पहुँचे ही ना हम मंजिल पर।

आँखे निहारती रही सदा, रोया मैं तुझको विसराकर।

किस चितवन से तुझको देखूँ, हम ठगे-ठगे से जाते हैं।

तुझ मुरली की धुन सुनने को, हम दौड़े-दौड़े भागे है।

11

नयना मेरे रिमझिम बरसे, तुम बिन मेरी छतिया धाड़के।

दर्शन की मैं प्यास लिये हूँ, जन्म-जन्म से जियरा भटके।

बीती बातें कुछ न जानूं, समझ नहीं कुछ रोना जानूं।

अब तो थाम मुझे ले निष्ठुर, प्यार के गीत सुनाए जानू।

रोया बहुत-बहुत भटका हूँ, कही मुझे ना मिला सहारा।

जीवन सारा बीत गया है, चल-चल कर मैं अब हूँ हारा।

क्या गुनाह मेरे थे प्रभु जी, ठोकर खाता तुझसे बिछुड़ा।

जीवन की खोई सुगन्धा सब, दुख को झेल रहा यह जिवड़ा।

तुझ बिन जीना कैसा जीना, तुझ बिन मुझको कुछ न चीन्हा।

अन्धी चाहत को लेकर, जन्म बिताया कुछ न कीन्हा।

जीवन की अब शाम हुई है, मेरे निष्ठुर कुछ तो बोलो।

12

रो-रो कर बीत गया जीवन, फिर भी आया ना क्यों सावन ?

बंधाने को हम है विवश हुए, तुम मुक्त करो मम भव बंधान।

सुपनों की डोरी सजा-सजा, तूने इस जग में भेज दिया।

चोटों पर चोटें दे देकर, क्यों यह दिल मेरा तोड़ दिया ?

पिछला अतीत कुछ याद नहीं, किसकी तुम सजा हमें देते ?

वर्तमान से मुक्त नहीं है, क्या भविष्य मेरा लिखते ?

कठपुतली बन हम नाच रहे, अपने आंसू का मोल नहीं।

कैसे हम तुमको समझाएं, इस जीवन का है ठौर नहीं।

हम विश्राम की आशा लेकर, निशदिन चलते ही रहते हैं।

आयेगा निश्चित वह मुकाम, जिसमें लीन सभी होते हैं।

टूटे सांसों की यह सरगम, इससे मुझको दुख न होगा।

ना नीर अर्धा मैं चढ़ा सका, इससे बढ़कर दुख क्या होगा ?

13

व्यग्रता सब खो गई है, सूर्य ढलने को हुआ है।

जिन्दगी की इस तपस को, यह डुबोने चल पड़ा है।

रोना चाहे रो सके न, है जलन कुछ न कहे मन।

अन्धाी गलियों में भटके, है यहाँ मजबूर यह मन।

हाय मैं तुमको पुकारुँ, तुम छिपे किस ओट में हो ?

गिर रहा प्रतिपल यहाँ मैं, क्यों क्षमा ना कर रहे हो ?

हैं नहीं बस चल रहा मैं, हूँ भ्रमित इस जगत में मैं।

रो न पाऊँ हाय क्यों मैं, कौन सी है पीर दिल में ?

अश्रु भी सूखे नयन के, कर प्रतीक्षा थक गये है।

हाय क्यों अभिशप्त से बन, इस जगत में घूमते है।

अर्चना मेरी अधूरी, कर ना पाता हूँ पूरी।

तेरी चौखठ पर देखूँ, जिद क्या जो मुझसे दूरी ?

14

बनना मिटना खेल यहाँ हैं, जान नहीं मन धीरज धारता।

पेट नचाता प्रतिपल इसको, आशाओं में खोया रहता।

तेजी से पल गुजर रहा हैं, नाता किससे जोड़ रहा है ?

ईश्वर में तू रम जा प्यारे, यह शरीर भी छूट रहा है।

जीवन में दुख तो आयेगे, तुझको बहुत सतायेंगे।

यही जिन्दगी का तो तप है, धौर्य धार प्रभु को पूजेंगे।

सब कुछ जाता छूट यहाँ हैं, किससे नेहा यहाँ लगायें।

पल दो पल का खेल-खेलकर, चलो यहाँ से कूद लगायें।

नयनों में है प्रेम जगाकर, घूमों इस जग के पर्दे पर।

इसी भूख से पीड़ित यह जग, देख रहे वह आंसू भर कर।

चलते जाओ गाते जाओ, पगडण्डी फिर नहीं मिलेगी।

देख-देख तू खूब देख ले, प्यास यहाँ ना कभी मिटेगी।

15

भक्त कहें हम किसे जगत में, इच्छाओं की होड़ लगी है।

उनको पूरित करने को वह, देते रहते यहाँ बली है।

नयना रोए क्या समझाऊँ, कैसी विचित्र यह दुनिया है।

औरों का शोषण करके भी, क्यों हाय यहाँ हम जीते है ?

योग्य नहीं मैं भक्त बनूँ, शरणागत अपनी ले लो राम।

दिक्भ्रमित हुआ मैं डोल रहा, तुम्हीं सम्भालों मेरे राम।

यहाँ विवशता की चक्की में, हरपल मैं पिसता रहता हूँ।

कर्मो के बन्धान में मैं हूँ, प्रतिपल ही रिसता रहता हूँ।

ग्यान धयान अब तुम्हीं सिखा दो, पाप पुण्य का भान करा दो।

मुझ अबोधा बालक को प्रभु तुम, अपने मग की राह दिखा दो।

जय श्री राम जय श्री राम, तेरे ही गुण गाये राम।

तुझमें सोये तुझमें जागे, तुझमें डूबे जय श्री राम।

16

किसकी आँखें करे प्रतीक्षा, निष्ठुर होकर वह बैठा है।

पथरा जायेगी यह आँखें, सोच में मनुआ तू बैठा है।

इन्तजार की घड़ियाँ मुझको, दिन और रात जलाती मुझको।

जाये जीवन प्रेम नहीं हैं, जीवन की अब चाह न मुझको।

रो-रो हार चुके यह नयना, इनको दोष न तुम अब देना।

मिलने का अवकाश न तुमको, चाहत अपनी पूरी करना।

मैं पागल मतिमन्द हुआ हूँ, तुम हो सूर्य गगन के प्यारे।

हमको जीवन में रस ना है, अब तो तेरा विरह पुकारे।

चोटों पर चोंटे तुम देते, फिर भी मन ना कुछ भी पूछे।

सता रहे मुझको तुम क्यों हो, बु(हीन प्रभु तुमसे पूछे ?

बु(मान तुम मूरख मैं हूँ, करो जुगत तुम प्रभु जी ऐसी।

थिर हो जाये आँखे तुझमें, चाह नहीं अब कोई ऐसी।

17

हो जगत के ईश तुम तो, तुम बता दो क्या करुँ मैं ?

क्या प्रयोजन है यहाँ पर, होता हूँ बैचेन क्यों मैं ?

तन हुआ बेकार मेरा, दिल यही टूटा हुआ हैं।

किस झरोके से मैं झांकू, दिल मेरा लगता नहीं हैं।

नाथ हो सारे जगत के, क्यों हुए अनाथ हम फिर ?

नीर सूखे है नयन के, रो नहिं पाते है हम फिर ?

तुम दया का दान दे दो, मार्ग भूले तुम चला दो।

सब तरु दीखे अन्धोरा, प्रकाश की तुम झलक दे दो।

अर्चना आती नहीं है, मूर्ख हूँ मतिमन्द हूँ मैं।

जन्म तूने क्यों दिया जब, न जगत के योग्य हूँ मैं।

तुम जगत अपना सम्भालो, है मुझे इसमें नहीं रस।

नीर आँखों के तो देखो, मैं जरा में हूँ गया ऱ्स।

18

तुम आओ या ना आओ अब, तेरी हम बाट निहारेंगे।

जो धाधाक रही पीड़ा अन्दर, उसमें मिटना स्वीकारेंगे।

सुपने संजोये तुझ संग थे, तूने निष्ठुर आँख न खोली।

मीठा-मीठा जहर आस का, देता रहा व किस्मत रोली।

सभी कहानी कहते-कहते, लुप्त हो गये जग के अन्दर।

गीत मही क्यों गाना चाहे, सब समाया मौन के अन्दर।

अच्छा और बुरा क्या जग में, तर्कों से सि) रहे करते।

सुख की एक बूंद पाने को, जग से सदा रहे हम लड़ते।

मेरे सुपनों में तुम आये, सुपना फिर सुपना रह जाये।

आँख मिचौनी खेल रहा तू, निष्ठुर मेरी प्रीति रुलाये।

सब आस हमारी टूट गई, यह दुनिया मेरी रुठ गई।

जीता हूँ इन सांसों को ले, तुम भी रुठे क्या खता हुई?

19

कुछ गम लिये कुछ गम दिये, फिर दुनिया से ही चल दिये।

हम बना जग को तमाशा, खुद ही तमाशा बन गये।

खोजती आँखे फिरे क्यों, हो रही बैचेन यह क्यों ?

वह छिपे पर्दे के पीछे, मिलने को बेताब मन क्यों ?

बस हमारा है नहीं कुछ, धार के संग-संग ही बहते।

कौन सी मंजिल पता ना, टूटी आशायें लखते।

सुपने सुंजोते रात-दिन, पूर्ण करने को मचलते।

रुठी मेरी क्यों नियति है, हाय पल में वह विखरते।

आँख के आंसू न देखे, टीस दिल की तू न जाने।

कौन सी तू धुन में डूबा, ना जगत की पीर जाने।

देख ले निर्मोही छलिया, बेसहारा हम बने है।

तेरी रहमत के भूखे, देख ले हम तो जले है।

20

आशाओं की गठरी लेकर, दौड़ लगाते हैं इस जग में।

किंचित हिल जाता यह शरीर, लगते सब भूल बचाने में।

सबकी अपनी यहाँ कहानी, गुणगान करे निज ही उसका।

पागल मनुआ जाने नाहि, क्या आदि अन्त जाना उसका ?

दुख के सागर में छिपी हुई, पथ ढूंढ रही मुस्काहट भी।

इसको मैं ढूंढू यहाँ-वहाँ, हैं खिले शूल कांटों में भी।

इस जगती से क्या ले जाऊँ, अनगिनत स्वरों का संगम है।

कैसा विराट यह मेला है, फिर भी तू हाय अकेला है।

जग में आकर आँखें खोली, मैं आँख मिचौनी जानू ना।

इस जग में भरमा कर मुझको, तू मुझको और रुलाये ना।

नश्वर है सब नश्वर होना, मत जला यहाँ तू अपना जी।

कर प्रभु समर्पित रट ले पी, इस थोड़े से जीवन को जी।

21

लिख-खिल शब्द करुँ मैं रचना, फिर भी नहीं मिले तुम भगवन।

कैसे पाऊँ मारग तेरा, जान सके ना ओ प्रिय भगवन।

जीवन बीते बिन सुगन्धा यह, क्या तुमको प्रिय है ओ भगवन।

मेरी भटकन में क्या रस है, नीर न देखे तू ओ भगवन।

मैं भटक-भटक हो रहा भ्रमित, रो-रो कर आँखे सूज गई।

कल क्या होगा यह पता नहीं, मंजिल मुझसे है रुठ गई।

प्रीति गीत ना मैंने सीखा, प्यासा जन्म-जन्म से मैं हूँ।

मरुस्थल सा हृदय मिला क्यों, तेरे प्यार से क्यों वंचित हूँ।

क्यों भटकन में हूँ भटक रहा, आंसू धारती में खोते हैं।

कह-कह कर हम भये बाबरे, सुर जाने सब कित खोते हैं ?

भगवन नजर उठाके अपनी, किस्मत में अब कुछ तो लिख दो।

इन सूनी आँखों में आकर, आंसू की वर्षा तो कर दो।

22

साथ तुम्हारा रहा नहीं अब, कैसे समझाऊँ मन को ?

पीड़ा का है जाम पिलाकर, छिपा गये हो तुम निज को।

तुमनें मेरी एक सुनी ना, सुना-सुना कर मैं हारा।

जीवन यह बदरंग हुआ है, आँखों का पानी खारा।

मैं भटका बहुत न दिशा मिली, सुख की कलियाँ नहीं खिली।

शिकवा करते तो किससे हम, छिपा कहाँ ना भनक मिली?

रो-रो कर हम चुप हो जाते, खुद घावों को सहलाते।

इस पर भी मन को चैन नहीं, पीड़ाओं को हम पीते।

गिर-गिर कर मैं प्रतिपल चलता, पीड़ा का देता वस्ता।

पीड़ा का ना दंश सताये, ना जाना ऐसा रस्ता।

आँखों के आंसू ना देखे, तुमने मुझको छोड़ दिया।

रहा भटकता इधार-उधार मैं, क्यों तुमने यह जुल्म किया ?

23

बन्शी धुन उस पार बजाता, चल उड़ चल मन पार गगन के।

दुख सब भूल यहाँ के पागल, गा अब गीत पिया मिलन के।

चला बहुत पर ना चल पाया, जीवन खिल-खिल कर मुरझाया।

चाहत ले लेकर मैं हारा, किया किनारा कुछ न पाया।

अन्तस उसका धयान लगा ले, विगती बातें तू विसरा दें।

छूटेगा न पकड़ किनारा, तू भी बह जा बस बहने दें।

तक-तक अँखियां भई बाबरी, मुझको ढांढस कौन बंधाये ?

भागा बहुत तुम्हारे पीछे, पर तुम मेरे हाथ न आये ।

उस पार खड़े तुमको देखूँ, रह-रह तेरी प्रीति बुलाये।

हाय विवश है किया नियति ने, नदी छोर न मिलने पाये।

चलते रहना तकते रहना, कट जायेगा यह सभी स्फर।

यह चाह बनी क्या है यह कम, दे दी पीड़ा तुमने हँस कर।

24

दुख के इस गहरे साये में, किसके आगे जा कर रोये।

जब खत्म कहानी की तुमने, निज साहस ले कैसे जीयें ?

आंसू ना पोछ सका अपने, हम रोए बहुत-बहुत रोए।

किन सपनों में थे हम खोए, ले कौन विवशता हम जीए।

दुख को कर-कर के स्वयं सृजन, रोता रहा रोता ही रहा।

अपने ताने-बाने में उलझ, आंसू से दिल धोता ही रहा।

इस जीवन की पगडण्डी पर, चलना चाहूँ मैं संभल-संभल।

गिर-गिर कर मैं प्रतिपल उठता, है किसका मुझमें यह सम्बल?

भूली बिसरी यादों को ले, इस मन को कैसे समझाऊ ?

है कौन प्यास जो भटक रहा, यह मर्म समझ ना मैं पाऊँ।

तुम सम्बल से चलना चाहूँ, खोना चाहूँ तुझ सांसों में।

तुम निष्ठुर बन कर दूर रहे, ना ऐसा जीवन में चाहूँ।

25

द्वार-द्वार पर घूमा मैं प्रभु, ना मिला ठिकाना कोई प्रभु।

तुम्हीं संभालो हे हरि मुझको, बोलो गुनाह क्या मेरा प्रभु ?

कैसे समझायें हम निज को, डूबा मेरा दिल जाता है।

लगे अजनबी दुनिया सारी, कुछ दीखे ना बस रोता है।

टूटी आशा तुम न आये, जीवन को अब कौन खिलाये ?

पथराई यह मेरी आँखें, ढांढस मुझको कौन बंधाये ?

निशदिन सपने तेरे देखूँ, जीवन सारा बीता जाये।

छलिया छल क्यों करता मुझसे, पल-पल मुझको हाय रुलाये।

पथ के दंश सताये मुझको, अँखियां झर-झर नीर बहाये।

डूब सकूं तुझमें वर देना, और नहीं कुछ मुझे सुहाये।

राह निहारेंगे तेरी प्रभु, इतना मुझको सम्बल देना।

नेह तुझी से लगा रहे बस, यह विश्वास न खोने देना।

26

हूँ भिखारी जन्म से, कुछ भी बुरा न मानना।

है डगर अनजान मेरी, लाज तुम ही राखना।

चल रहा हूँ गिर रहा हूँ, अश्रु से पूजा करुँ।

दिशा विहीन हूँ मैं हुआ, पाऊँ क्या जतन करुँ ?

मन में तुम बसे हुए हो, सांसों में रमे हुए।

ढूंढता मैं फिर रहा हूँ, किसलिये तुम छिप गए।

जन्म क्यों मैं जी रहा हूँ, किसलिये मैं चल रहा।

पाऊँ कैसे भ्रान्त मैं, तुम बिना मैं रो रहा।

डूबता हूँ तुम बचा लो, अब सहारा तुम्हीं दो।

तुम क्षमा का दान दे दो, शरण अपनी मुझे दो।

तुम रखैया सभी के हो, जी रहे हैं तुम बिना।

है डगर क्या हाय मेरी, रो रहा तेरे बिना।

27

चल उड़ चल उस पार गगन के, देख ना रोएँ दर्द जगत के।

कैसे लिखूँ नयना झर-झरते, दिल में पीड़ा गीत चुभन के।

नयना झांके कुछ नहिं पावे, कैसे हम दिल को समझावें ?

रुदन बिखरता जाये प्रतिपल, मोहि न कोई ढांढस देवें।

तुझसे मिलना होय कभी ना, रैन विरह की कभी मिटे ना।

पागल बन मैं फिरुँ जगत में, लाज तुझे फिर भी आवे ना।

नयना मेरे झर-झर बरसे, रात अन्धोरी स्वप्न मिलन के।

इस धारती की प्यास बुझे ना, कैसे पाऊँ जियरा धाड़के।

खोई-खोई अँखियां खोजें, पन्थ निहारे पन्थ न दीखे।

बना दिवाना फिरुँ जगत में, शायद मुझको रस्ता दीखे।

तेरी रहमत का प्यासा जग, मुझको तू दो बूंद पिला दे।

कैसे करुँ प्रार्थना तेरी, जीवन का मतलब समझा दे।

28

कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे, नयना रोए तुम ना आये।

राह निहारुँ भया बाबरा, कैसे जीवन को समझाये ?

चल-चल कर गिरता हूँ प्रतिपल, किसकी अब मैं बाट निहारुँ ?

लड़े तुझी से मेरे नयना, बता मुझे मैं किसे पुकारुँ ?

मेरी सुधि ले लो तुम निष्ठुर, जल-जल कर मैं खाक हुआ हूँ।

जीवन की अंतिम सांसों तक, नहीं मिलो क्या कसम हुई है।

कैसा जीवन तुझ बिन जीवन, सब तार हमारे टूटे है ?

रोएँ भी हम कैसे रोएँ, क्या अश्रु हमारे झूठे है ?

आये जग पाया ना तुमको, क्या देख-देख मन बहलाये ?

सरिता जीवन की सूख गई, ना आंसू से जी भर न्हायें।

हे देवता तुम्हीं सम्हालो, मैं विवेक से शून्य हुआ हूँ।

बतला दो मेरा कसूर क्या, तुझको खो मैं भटक रहा हूँ।

29

मन गा ले आज खुशी से तू, कोई तुझे पुकार रहा है।

सोई वर्षों से अभिलाषा, मिलने को तुझसे आतुर है।

प्यासे नयनों में रस जागे, मतलब जीवन का हल होवे।

सारा जीवन रोकर काटा, पी से मिल सब सुधि विसरावे।

हर्षित आंसू झर-झर झरते, मतलब जीवन का हल करते।

दंश भूल सारे जीवन के, अब तो बस हैं पी को लखते।

भूल न जाना अब जीवन में, चरणों में मुझको रख लेना।

भटक-भटक कर हुई बाबली, वंचित नहीं प्यार से करना।

तुझको पा बस चैन मिला है, जलता रहा सदा जीवन भर।

तुझसे मैं ना जाऊँ बिछुड़ प्रभु, मुझको लगता है प्रतिपल डर।

सांस-सांस में तुम बस जाओ, मेरे जीवन तुम हो जाओ।

यह प्रार्थना मेरी प्रभु है, मुझको नहीं कभी विसराओ।

30

किस जगह तुमको पुकारुँ, इस जहाँ में खो गये।

अश्रु गिरते ही रहे तुम, हाय निष्ठुर हो गये।

हम विलग हो रो रहे हैं, सुधि नहीं क्यों ले रहे ?

क्या मजा है ले रहे हो, देख कर हर्षा रहे।

दिल नहीं लगता यहाँ पर, खोज मैं पाता नहीं।

किस जगह जाऊँ बतादे, हँस रहा जग गम नहीं।

नीर से ना द्रवित होते, कैसे रिझाये बता।

वासनाओं में ंसे है, हम मिटे कैसे बता।

थाम लो प्रभु हाथ मेरा, हम यहाँ पर भटकते।

तुम दिखादो एक झलक बस, नयन तुझको तरसते।

है यही दुनिया रंगीली, तुझ बिना है रस नहीं।

किस जगह तू खो गया है, क्यों नजर आते नहीं।

31

लिख-लिख भेजूँ तुमको पाती, कोई पाती काम न आये।

झर-झर मेरे नयना बरसें, ना धारती की तपस मिटाये।

चल लेता रो लेता मग में, तुझको अँखियां खोज रही हैं।

नजर न आवे किसे सुनावे, किस्मत मेरी रुठ गई है।

आशाओं की गठरी लादे, इस जग में मैं घूम रहा हूँ।

रहा सुलगता जीवन भर मैं, मृगमरीचिका भटक रहा हूँ।

आते जाते इस दुनिया में, समझ नहीं हम तुमको पाते।

कैसा स्वांग रचाया तुमने, इस जीवन को ना लख पाते।

प्यासा मन यह प्यासा डोले, क्यों प्यास मिटा न तुम पाये।

पागल बन हम घूम रहे है, हे ईश्वर न तुमको पाये।

इस जीवन के तुम मालिक हो, इन अँखियों में आंसू आये।

तू सम्हाल मेरे ईश्वर, नैया मेरी डूब न जाये।

सर्वत्र तू है व्यापक, गीत मेरे गाये।

हम तो रिझा न पाये, जिन्दगी है जाये।

आँसू यह तैरते है, डूब हम ना पाते।

नीरस यह जिन्दगी है, रस सींच नहिं पाते।

ीकी हँसी ले हँसते, रुदन ले भटकते।

खोई हुई है मन्जिल, सुपने ले विलखते।

शत-शत नमन को अपने, स्वीकार तुम करना।

मिट जायेंगे यहाँ हम, ले ले रुदन अपना।

सभी चल रहे यहाँ पर, राही बन भटकते।

रोते हैं खेलते हैं, जीवन ना समझते।

आँसू की अन्जली को, स्वीकार तुम करना।

जायेंगे हम कहाँ पर, कुछ नहीं है अपना।

33

खोजूं तुमको खोज न पाऊँ, आंसू से तुमको नहलाऊँ।

मैं भी रहूँ यहाँ ना बाकी, डूब यहाँ अंसुबन में जाऊँ।

वन्शी की धुन कौन सुनेगा, तुम बजाते रहना ईश्वर।

खेल रहे तुम इन पुतलों से, रस क्या है बतला दे ईश्वर।

कर्म फांस का जाल बिठाया, पड़े हुए सब इस बंधान में।

मुक्त हुए तुम देख रहे सब, रोते हैं सब दुख पीड़ा में।

तेरी लीला समझ न पाते, तुझको है सब शीश नवाते।

रो-रो नयना हुए बाबरे, तेरा पता नहीं वह पाते।

कैसे समझाऊँ इस दिल को, करुँ शिकायत मैं किससे अब।

सुनता नहीं यहाँ कोई भी, फिर भी क्यों रोता है तू अब।

रो-रो कर जी लेंगे जग में, छिपे-छिपे आंसू गिन लेना।

तूने हमको जग में भेजा, तड़ हमारी तुम लख लेना।

34

मैं रोया आंसू ना देखे, यह भी है सब किस्मत लेखे।

तुम हो सुन्दर जगती सुन्दर, कैसे हम अपना मन देखे।

मैं भटक रहा तुमको पाने, थिर कहीं नहीं रह पाता हूँ।

तेरी लीला से हो उदास, कित खो जाना मैं चाहूँ हूँ।

दर्शन हर कदम-कदम पर है, तेरा दर्शन ना कर पाता।

टूटी वीणा ना गान उठे, कैसे इस मन को समझाता।

क्यों बन अनाथ हम रोते हैं, सुधि हमरी तुम क्यों ना लेते।

आंसू की अविरल गंगा में, बहते पर ठौर नहीं पाते।

मेरी आँखों में बस जाओ, जग में ना मुझको तरसाओ।

मैं बु)हीन ना समझ सका, अपनी करुणा को बरसाओ।

नाचू गाऊँ मैं हर्षित हो, ना नीर मुझे टिकने देते।

कैसे तेरा गुणगान करुँ, क्यों नहीं मुझे तुम अपनाते।

35

उठे विरह के गीत नयन पर, ना रिमझिम बरसाये।

ऐसा जीवन भी क्या जीवन, तुम बिन हम तरसाये।

देखे तुझे नहीं हम पावे, जग में ही खो जावें।

प्रेम पींग को नहीं बढ़ावे, क्यों हमको तरसावे ?

कदम-कदम तू मुझे लिये चल, दामन छोड़ न देना।

प्यास अधूरी करना पूरी, चरणों में रख लेना।

अन्धाा बन मैं घूम रहा हूँ, ज्ञान दीप दर्शाना।

हार गया मैं हे करुणाकर, साहस मुझमें लाना।

अँखियां रोई तुम न बोले, कौन सुनेगा मेरी ?

अँखियां भी ये हार चुकी हैं, सुन ले विनती मेरी।

सांस-सांस में तुझे पुकारुं, इतना ही वर देना।

भूल सकूँ न तुझे किसी पल, सुधिा चाहें न लेना।

36

कल्पना में जी रहे हैं, स्वप्न में चलते यहाँ।

दुख जगत के देख कर ही, आँख रोती है यहाँ।

पाये क्या नश्वर सब है, जल रहा सब लुट रहा।

हाय यह कैसी लचारी, जी विवश हो रो रहा।

ले भुलावा ले भुलावा, पथ यहाँ हम काटते।

छल रहे निज जिन्दगी को, कुछ नहीं हम जानते।

हम भटकते है जहाँ में, अज्ञान पूरित यहाँ।

ज्ञान की इक बूंद दे दो, पा सकें तुझको यहाँ।

तुमको पुकारे हम प्रभु, गीत में बस गा रहे।

आँखे उठाकर देख लो, जगत ठोकर खा रहे।

हम भिखारी है सदा से, पथ में प्रकाश कर दो।

अश्रु को स्वीकार कर लो, कुछ नहीं क्षमा कर दो।

37

तुमको नमस्कार करते हैं, सृष्टि रचियता हम अज्ञानी।

चलता है आदेश तुम्हारा, कहते हैं हम खुद को ज्ञानी।

ठोकर खाता ज्ञान हमारा, बने हुए हैं हम अभिमानी।

फंसे-भंवर में घूम रहे हैं, तुमने भी क्या है यह ठानी।

दंश अनेकों लगते जग में, भाग रहे हम सुख के पीछे।

कब धुन हमें सुनाई देगी, प्राण लगेंगे तेरे पीछे।

कैसा हूँ अपना लो मुझको, मार्ग न कोई पाता हूँ।

भटक रहा अन्धी गलियों में, क्यों हाय तुम्हें मैं खोता हूँ।

जग के वैभव नीरस लगते, क्यों इतना शुष्क किया मुझको।

तुम चरणों में मैं बैठ सकूँ, दे दो वर निष्ठुर यह मुझको।

अँखियां झरती है झरने दो, रोको न इसे यह सुख मेरा।

डूब इसी में तुम जाने दो, पूर्ण कर दो यह काम मेरा।

38

सागर है मुझको बुला रहा, पर तेरा पता न पाता हूँ।

इस मन को कैसे समझाऊँ, क्यों तुमको मैं ना पाता हूँ।

जग में आये नाचे गाये, पर यह वैभव रास न आये।

खोजे अँखियां भई बावरी, तुझ बिन कैसे जश्न मनायें।

टूट रहे सब स्वप्न सुहाने, बन न सके तेरे दीवाने।

छलते रहे सदा जीवन को, वंचित न कर प्रेम दीवाने।

सरिता सागर से मिलने को, प्रतिपल ही वह वहीं जा रही।

क्या होगा दीदार न तेरा, मिटने की बस घड़ी आ रही।

नीरस रेगिस्तान हुआ मैं, प्रेम डगर की कहाँ खो गई।

दीप चला दो ढूंढ सकूं मैं, तुझ बिन मैं हूँ सुप्त हो गई।

आओ-आओ कुछ सुख दे दो, इन आँखों में मोती दे दो।

बिखरे मोती तो सुख उपजे, मुझको निष्ठुर यह वर दे दो।

39

ढूंढ रहा हूँ बना बावला, इस जग की पगडण्डी पर।

चलते-चलते खो जाते हैं, बीत रही है क्या दिल पर।

आशा के हम महल बनाते, स्वप्न सुनहले लेते हैं।

क्षण में टुकड़े-टुकड़े होते, संभल नहीं हम पाते हैं।

केवट बन तू पार लगा दे, डूब रही नौका मेरी।

भटक रहे इस भवसागर में, सुन प्रार्थना लो मेरी।

नहीं वन्दना के स्वर जानूं, फिर भी याद तुझे करता।

रख लेना प्रभु लाज यहाँ तुम, जीया पल-पल में भरता।

ले चल मुझे भुलावा देकर, इस भव के तू पार प्रभु।

लिपटी हैं पीड़ा की चादर, पल-पल रोएँ नयन प्रभु।

तेरी सृष्टि रचियता तू है, हम अज्ञानी बालक हैं।

दे सकें परीक्षा न तेरी, अँखियां रोती रहती है।

42

जीवन की तज अभिलाषाएँ, आता तुम्हारी ओर प्रभु।

कुछ गीत गा सकूं बस तेरे, करुणा सागर मेरे प्रभु।

यहाँ विविधाता रंग अनेकों, तेरे बिन सूना सब प्रभु।

आशाएँ बन-बन कर गिरती, नजर उठा कर देखो प्रभु।

लक्ष्यहीन बन घूम रहे हैं, इस जग के अन्दर हम प्रभु।

पथ को आलोकित तुम कर दो, बढ़े तुम्हारी ओर प्रभु।

भटक रहे हम भटक रहे हैं, जीवन बीत गया यह प्रभु।

तुझको हम पहचान न पाये, ऐसा जीवन भी क्या प्रभु।

कर सके अर्चना ना तेरी, उलझा जग में मेरे प्रभु।

उलझ-उलझ कर हम रोएँ है, पाया ना तुझको हे प्रभु।

क्षमा हमें तुम कर देना बस, अज्ञानी हैं घूमे प्रभु।

चलते जाये चलते जाये, चरणों तक पहुँचे हे प्रभु।

43

अँखिया मेरी झर-झर बरसे, मिले न साजन मोय।

प्रीति भी उसकी प्यारी लागे, छोड़ न जाना मोय।

सोऊँ जागूँ बाट निहारुँ, तुझ बिन जियरा रोय।

अपना मुझको दास बना लो, वर यह दे दे मोय।

तेरा मन्दिर प्यारा लागे, नहीं छिटकना मोय।

अंसुअन की नहिं जग में कीमत, तू ना वैरी होय।

दीप जलाऊँ तुझ को पूजूं, कुछ न मुझसे होय।

रुक-रुक कर रोना जानू, कैसे मिलना होय।

मन्दिर द्वारे आन पड़ा हूँ, देखो निष्ठुर मोय।

हटा न मन्दिर से बस मुझको, बाकी हो सो होय।

अपना जख्म दिखाऊँ किसको, मुझे न देखे कोय।

तेरी याद सताये प्रतिपल, जियरा बैरी होय 44

निज दीप तू उर में जला ले, इस अंधोरे को मिटा दे।

उदास अँखियां देखती जो, गम उसी का कुछ मिटा दे।

सब की अलग है वासनाएँ, मग अलग तो दुखित क्यों है ?

देखों यहाँ संजोग पल का, ना पता फिर हम किधार है।

तू डूब उसमें धयान करले, सृष्टि जिसकी यह मही है।

यह नीर हम किसको चढ़ावे, पी रही यह सब मही है।

हम आ रहे ना बस हमारा, जा रहे ना जोर चलता।

बोलो अकड़ किसको दिखावें, पलक झपके दीप बुझता।

बहती नदी है अश्रुओं की, कित छिपी इसमें खुशी है।

यह जन्म बीता खोजते हम, चलन की आई घड़ी है।

मेरा नमन है इस जगत को, है यह दो दिन का डेरा।

तू ईश दे दे उसे खुशियाँ, दुख ने है जिनको घेरा।

45

कर रहे है हम प्रतीक्षा, रुठ तुम हमसे गये।

नीर में डूबे हुए हम, गीत सारे खो गये।

अश्रु की बरसात होती, चाह की चिता जलती।

मांगती क्या जिन्दगी है, पीड़ दिल में सुलगती।

कौन से सुरों से गाऊँ, कैसे रिझाऊँ बता।

कंठ यह अवरु) मेरा, जा रहा कित ना पता।

क्या नहीं अधिाकार मेरा, गुनगुनाऊँ मैं हंसू।

जगत गलियों में भटकता, कर्म बन्धान में ंसू।

तुम हो आराधय मेरे, ेर क्यों मुख को लिया।

प्रभु नीर बहते देख लो, दुख तुम्हें हमने दिया।

क्या करें हम विवश प्रभु हैं, ज्ञान से वंचित रहे।

*नीर की गंगा में बहकर, खोजते बस फिर रहे।*46

साथ रही है सदा उदासी, मर्म न जीवन जान सकी।

सरिता सागर में गिरने को, कूलों को ना भुला सकी।

अँखियों से बरसात हुई है, जिय की जलन न बुझा सकी।

आशा के ताने बाने में, ंस रोई सब गवां चुकी।

निष्ठुर तुझसे प्रीति हुई ना, जीवन सारा खो डाला।

कैसे मैं पाऊँगा तुझको, बिसर तुझे मैंने डाला।

लहरों पर मैं नाच रहा हूँ, विवश हुआ सा डोल रहा।

किन आशाओं को ले पथ में, इस जीवन से जूझ रहा।

किसको कहें यहाँ पर अपना, तन भी छूटा जाता है।

इस मृगमरीचिका में ंसकर, छूटा तुमसे नाता है।

ईश शरण पड़ते है तेरी, अज्ञानी है क्षमा करो।

तेरी यादों में डूबे हम, दो प्रकाश स्वीकार करो।

अधियारे में कुछ न दीखे, चलूँ यहाँ है कोई खींचे।

भई दीवानी पागल मीरा, अंसुअन से धारती को सींचे।

पागल बन हम घूम रहे हैं, इच्छाओं के दास बने हैं।

अंधियारे में किरण दिखा दो, हे ईश्वर हम सदा जले हैं।

आँखियां ढूंढ-ढूंढ कर हारी, छिपे हुए तुम कहाँ मुरारी।

अर्धा चढ़ा ना पाई आँखियां, सूखी झील यह आँखियां हारी।

अंधियारा ना मुझे डरावे, तेरे पथ पर नाचे गावे।

सब तज पर कर जीवन आशाएँ, गुण तेरे सदैव ही गावे।

तुझ तक चल कैसे मैं गाऊँ, पथ दे दो मैं तुम्हें मनाऊँ।

रोती आँखियां बाट निहारे, तुम बिन जीवन से घबराऊँ।

झील न सूखे इन आँखियों की, नहीं हमें कुछ और सुहावे।

*विलग हुए हम भटक रहे हैं, कैसे तेरी धवनि को पावे।*48

गठरिया पाप की शीश धारी, हरि तुझ तक मैं कैसे आऊँ ?

आँखों से बरसात बरसती, आग बुझा यह क्यों ना पाऊँ ?

इस धारती पर किया बसेरा, चले यहाँ ना हुआ सबेरा।

तुम प्रकाश की किरण दिखा दो, तम ने है बस मुझको घेरा।

कैसे कहूँ कुछ कह न पाऊँ, रो-रो अपना जी समझाऊँ।

क्या है गा अपराधा हमारा, तेरे नहि दर्शन को पाऊँ।

धारती पर आवाज लगाई, दुग्धा बूंद तूने बरसाई।

रहे इसी चक्कर में प्रतिपल, भूल गया तू क्यों हरजाई।

रिमझिम-रिमझिम नयना बरसे, थके नयन हैं तुझको तरसे।

पगडण्डी पर छोड़ गया क्यों, कैसे मिले जो जियरा हरसे।

नमन करो स्वीकार हमारा, विवश यहाँ दिल मेरा हारा।

तुझ चरणों में डूब सका ना, बहती यह अंसुओं की धाारा।

सूना तुम बिन सब लागे है, जियरा तुम बिन ना लागे हैं।

अँखियों में मूरत है तेरी, याद तुम्हारी न जाये हैं।

हरपल अँखियां नीर बहाये, तेरे बिन मो कुछ न सुहाये।

थके नयन पर तुम ना आये, ज्योति हमारी बुझती जाये।

बनो न निष्ठुर हमें संभालो, ज्योति हमें भी तुम दर्शा दो।

भटका जन्म-जन्म में जियरा, इसकी अब तो ग़ांस मिटा दो।

यहाँ विवश हम मग ना दीखे, नाम तुम्हारा कुछ ना सूझे।

कर्मबन्धा में बंधो यहाँ हम, कैसे इससे पीछा छूटे ?

नैन लगावे झड़ी अश्रु की, तुझ चरणों में अर्धा चढ़ावे।

पूछें दोष हमारा क्या है, जो तू हमको पीठ दिखावे।

रुठे ना हम हार गये हैं, शरण तुम्हारी आन पड़े हैं।

*हटा न देना इस पथ से तू, चाह यही हम लिये हुए हैं।*50

ईश्वर तुम हमें करो क्षमा, बालक तेरे नांदा है हम।

तुम ज्ञान पुंज अज्ञानी हम, तुम विसरे चलते लेकर गम।

पथ देखे नयना ना आये, सुधिा हमरी काहे विसराये।

हम भटक रहे इस जग में हैं, तेरे पथ को ना क्यों पाये ?

सब भाग रही है यह दुनिया, क्या हौड़ लगी है पाने की।

जीवन बीता ना तू दीखा, है तैयारी अब चलने की।

पाप पुण्य से पटी धारा हैं, मैं बन अविवेकी घूम रहा।

पाऊँ दर्शन दो किरण मुझे, चहुँ ओर तुझी को खोज रहा।

आया बसन्त पतझड़ लगता, आँखों का ना आंसू सुखता।

तेरे बिन जीवन क्या जीवन, सारा जग यह ग़ीका लगता।

स्वीकार करो आंसू मेरे, गिर चरणों में रो लेने दो।

बहुत कृपा तेरी ईश्वर, अपने मन्दिर पर चढ़ने दो।

51

रोई अँखियां तू ना आया, खोया पथ मैं क्यों ना भाया।

जग के स्वामी वश नहीं यहाँ, दे दो मुझको अपना साया।

हम अबल यहां रोना जाने, कैसे तुमको हम पहचाने?

अंधी आंखिया ना खोज सकें, दे किरन मुझे वह पहचाने।

जग दंश लगे ना आँख खुले, मन इसमें ही है भरमाया।

नगरी तेरी मालूम नहीं, यह सोंच-सोंच जी घबराया।

तुम देख हमें लो करुणाकर, हारी अँखियां तुमको तक कर।

ढल जाये यह ना शाम कहीं, करो कृपा मेरे ईश्वर।

अज्ञानी है दो ज्ञान हमें, जीवन में कुछ उल्लास जगे।

गा-गा कर तेरे गीतों को, खो जायें हम यह प्यास जगे।

स्वीकार करो आंसू मेरे, जो मिट्टी में हैं मिल जाते।

*तुम दर्द हमें कितना ही दो, रुठो ना यह विनती करते।*52

हम विलख रहे सन्तान तेरी, हे ईश कृपा हम पर करना।

हम क्षमा मांग सकते है बस, तुम अश्रु हमारे लख लेना।

कैसे तेरा दीदार मिले, हम भटक रहे ना छोर मिले।

जग विषयों में डूबा मनुआ, कैसे जीवन का सुमन खिले ?

हे ईश हमें पथ दर्शादो, हम उलझ-उलझ कर रोते हैं।

नश्वर जग में क्या चाह करें, तेरे बिन तड़े जीवन हैं।

तुझ ओर लगी है यह आँखें, चहुँ ओर अंधोरा छाया है।

थर-थर पग मेरे कांप रहे, ढूंढू तेरा कित साया है।

है कौन प्यास जो तुझे रटे, छवि तेरी नयना माहि बसे।

यह जन्म-जन्म का नाता है, रुठो ना ईश्वर हिय बसे।

अश्रु चढ़ाऊँ तुझ चरणों में, है जग में इनका मोल नहीं।

कैसे तुझे पुकारुँ ईश्वर, कृपा सुधाा दे मार्ग यही।

53

चल उड़ चल उस पार गगन के, जियरा रोए बिना मिलन के।

पल-पल पंथ निहारें अँखियां, कैसे बजे गीत अनहद के।

करुँ प्रतीक्षा तू ना आया, मन को ढांढस नहीं बंधााया।

सावन बीता जीवन रीता, जल बिन मछली सा तड़ाया।

हारे नयना तुझे निहारें, कैसे जीवन बता संवारे ?

निर्मोही ना बन ओ छलिया, तुम बिन कृपा यहाँ पथ हारे।

;षि-मुनी सब धयान लगाते, जपते-जपते तुझको पाते।

कैसे धयान लगाऊँ तेरा, रोक रुदन हम यहाँ न पाते।

तुझको ढूंढू-ढूंढ न पाऊँ, कैसे इस मन को समझाऊँ ?

तुझ करुणा की भीख मांगता, बीता जीवन मैं शर्माऊँ।

अपना प्यार प्रभु दर्शा दो, तेरा जीवन आँख न मूंदो।

*बहे जगत धाारा में तुमको, भूले ना प्रभु जी यह वर दो।*54

तू देख मनुआ देख ले, खूब जी भर देख ले।

बीतता सब जा रहा है, छूटता सब देख ले।

प्यार भी धाोखा हुआ क्यों, यह किसी से पूछ ले।

न मिले तुझको यह उत्तर, तो स्वयं से पूछ ले।

कूल से मत बंधा लहर तू, जायेगी पता कहाँ ?

है मिलन फिर है बिछुड़ना, यह नचायेगी यहाँ।

दंश को सहला यहाँ पर, तू स्वयं मल्हम लगा।

देख ले तू अश्रु बहते, बंधा रुकने पर लगा।

बह लहर पर छोड़ निज को, ना किनारा जानता।

रोये कितना ही यहाँ पर, है विवश तू जानता।

बह रहे बहे जायेंगे, यह सफ़र भी है कटे।

ईश तुम वह दृष्टि देना, नजर तुझसे न हटे।

55

हे ईश न मुझसे तुम रुठो, यह जीवन बीता जाता है।

कण-कण में व्यापक तुम हो प्रभु, क्यों ना फिर तुमको पाता है।

ढल जायेगी यह शाम यहीं, तेरे वियोग में रो-रो कर।

तुम एक नजर से लख लेना, क्षमा करो हे सर्वेश्वर।

पथ नहीं मिला हम भटक रहे, ना पता लहर कित ले जाये।

पल-पल परिवर्तित जीवन में, कैसे इस दिल को समझायें।

चाहत का अम्बार लगा है, उसमें मनुआ खो जाता है।

विस्मृत कर तुझको ईश्वर, वह सदा तड़पता रहता है।

हैं विवश यहाँ मजबूर हुए, तेरे जप से हम दूर हुए।

फिर भी झोली फैला मांगे, तेरे बिन सुपने चूर हुए।

तू ही मालिक इस दुनिया का, कण-कण तेरे ही गुण गायें।

*हे ईश हमें यह वर दे दो, तुझमें ही बस हम खो जायें।*56

पा सके नहीं हे ईश तुझे, बहती अंसुओं की धारा है।

मिलते सब यहाँ बिछुड़ जाते, यह दो दिन का बस मेला है।

हम मांग रहें है भीख यहाँ, हे ईश क्षमा तुम कर देना।

अज्ञानी हूँ पथ से वंचित, हे ईश हमें तुम लख लेना।

चरणों में सिर रख रोने दो, पीड़ा का दंश लिये फिरते।

बालक की विनती सुन लेना, मुँह से हम कुछ भी ना कहते।

ना खोज सकूं इस जीवन में, किस ओर बहेगी यह धारा।

हर पल तू हमें खिलाता है, पर आँखों का पानी खारा।

चाहत हैं तुझमें ही डूबूं, दीदार तेरा करना चाहूँ।

सूनी अँखियां क्या देंखे है, मन को समझाना मैं चाहूँ।

हे ईश करे हम विनय यही, निज से वंचित ना कर देना।

जीवन की अंतिम सांसों तक, हम जपे तुम्हें यह बल देना।

57

क्या कहें तुम्हें यह दिल टूटा, कहने को अब ना जी करता।

ढल जाये यह बस शाम कहीं, शिकवा तुमसे ना कुछ करता।

इच्छाओं का है ज्वार अलग, हम बहे जा रहे बेबस हो।

हर सुबह उमंग लेकर आती, पर शाम न जाने कैसी हो ?

चलना जीवन का लक्ष्य यही, सुख देने में सुख पाना है।

गा अपने-अपने राग यहाँ, इस दुनिया में खो जाना है।

प्यासी धारती तू अश्रु पिला, कुछ ूल यहाँ खिल जायेंगे।

बदरंग नहीं करना जग को, सन्तोष यही ले जायेंगे।

हर सांस समर्पित कर प्रभु को, पथ तुझको वही दिखायेगा।

मालिक ही तुझसे रुठ गया, तब मग को कैसे पायेगा ?

जपता जा चलता जा मग में, हमको ईश्वर सद्बु) दो।

*अज्ञानी हैं हम भटक रहे, अपनी करुणा को बरसा दो।*58

हे ईश हमें तुम पथ दे दो, तुझ चरणों तक हम आ जाये।

है पास नहीं कुछ भी मेरे, जियरा रह-रह कर घबराये।

हम भटक रहे जग के अन्दर, बहलाते मन को फिरते हैं।

ना तृप्ति मिली ना तुम्हीं मिलें, नयनों से आंसू बहते हैं।

;षि-मुनि हारे ना खोज सके, कैसा तुम खेल रचाया है।

पीड़ा के बहते सागर में, आशा का ूल खिलाया है।

तुम क्षमा करो मेरे ईश्वर, ना जान सका कैसे आऊँ।

कर्मों के बन्धान में बंधाकर, निज ंसता उसमें मैं जाऊँ।

आंसू की कीमत नहीं यहाँ, वह चढ़ा रहा हूँ मैं तुमको।

दुःख अपने गा-गा कर ईश्वर, दुख ही देता हूँ मैं तुमको।

गा-गा कर तेरे गीत प्रभु, इस जग में हम खो जायेंगे।

कर सके अर्चना हम तेरी, यह सुख तो लेकर जायेंगे।

59

हे ईश क्षमा करना हमको, शरण तुम्हारी आ ही गये।

निज में बल नहीं भव पार करुं, अश्रु अँखियों में आ ही गये।

सुपनों के जाल बुने हमने, उसमें ंस-ंस कर हम रोए।

जीवन का मर्म न जान सके, जीये पर हम ना जी पाये।

अज्ञानी बन हम भटक रहे, हम मूरख हैं स्वीकार करो।

अपनी करुणा को प्रभु दे दो, जियरा रोए उ)ार करो।

चाहत की गठरी शीश धारी, तुझ पथ तक मैं ना आ पाऊँ।

हूँ विवश यहाँ कर्मों में ंस, लख चादर मैली घबराऊँ।

बहते आंसू को लख ले प्रभु, तुझ पूजा में खोने दे प्रभु।

पल-पल बीता जाता है प्रभु, जी लेने दे इन पल को प्रभु।

तेरी राजी में रजा रहे, बल ऐसा दे दे तू हे प्रभु।

जीवन की कुछ घड़ियाँ बाकी, मत विलग करो मेरे हे प्रभु।60

मन नहीं लगता यहाँ पर, ख्वाब ले मैं जी रहा।

सब छूटते ही जा रहे, डूबा गमों में मैं रहा।

कैसे बजे यह बांसुरी, अज्ञान में दबा रहा।

आँखे न खोली बेका, तू छिपा मुझसे रहा।

बह रही सागर लहर है, ले कहीं जाये हमें।

तुझ बिना कितना तड़पते, देख ले निष्ठुर हमें।

डोलूं लहर पर सोंचता, विश्राम तो कित मिले।

बीता भटकन में जीवन, चाह कर भी ना खिले।

यहाँ कितने गीत गाये, अनंत में सब खो गये।

विस्मृत वह छवि ना हुई, यहाँ रोते रह गये।

है अवश लो अश्रु लो, हंसे जग के जाल में।

हम पा सके ना तुझ चरण, रोय जियरा विरह में।

जन्म भी तू मृत्यु भी तू, अर्चना तेरी करें।

शून्य में ही हम भटकते, नीर आँखियों से गिरे।

कौन मूरत हमें भाये, खोजते हम फिर रहे।

कौन सी है वह लचारी, हम भुलावा दे रहे।

है प्रकट किस भाव को ले, बीज में जो शुन्य है।

होती समाधि तब प्रगट, शुन्य से जब मेल है।

किससे करें शिकवा यहाँ, वासना के दास है।

विस्मृत तुमको न करे, बस यही अरदास है।

नीर आँखियों में लिये हम, खोजते तुमको फिरे।

अनूठी लीला तुम्हारी, हमी नश्वर को वरे।

अश्रु की सौगात ले लो, कुछ नहीं पास हमरे।

*पीड़ को तुम ईश हर लो, बहकते कदम हमरे।*62

तेरे बिना जियरा न लागे, बाट निहारुँ तू नाहिं आवे।

रिमझिम-रिमझिम नयना बरसें, कैसे हम दिल को समझावें।

पार लगा दो क्यों न डुबा दो, अपनी बस तुम झलक दिखा दो।

अरज करुँ मैं पांव पड़ूं मैं, दिल की मेरी पीड़ मिटा दो।

चल-चल हारा तुझे न पाया, जग में मैं तो बस भरमाया।

कृपा करो हे कृपा सिन्धु तुम, तेरी शरणागत मैं आया।

;षि-मुनि सब धयान लगाते, कैसे करें हम न कर पाते।

तेरी कृपा हो तो तर जाये, इस जग में हम डूबत जाते।

ज्योति जला दो राह दिखा दो, प्यासे की तुम प्यास बुझा दो।

इस सूखी बगिया के अन्दर, अपनी करुणा को दर्शा दो।

करो अश्रु स्वीकार प्रभु तुम, कुछ भी मेरे पास नहीं है।

देख रहा तुझ ओर प्रभु बस, जीवन में कुछ चाह नहीं हैं।

63

हम जख्म यह किसको दिखायें, नयना आंसू आये।

मेरे देवता हुए प्यासे, प्यास कैसे बुझायें।

अंखिया ढूंढे पथ न पावे, नीर गिरें खो जाये।

बिछुड़े तुमसे दर्द सतावे, सिसकी ले रह जायें।

छोड़ हमें तुम कहाँ छिप गये, क्या तू खेल खिलाये ?

अंखियों के आसूं तो गिन लो, दर्द कलेजे जाये।

कर-कर हारे यहाँ शिकायत, बेबस हो रह जाये।

भवसागर में डूब रहे हैं, कैसे पार लगाये ?

योग्य बना न करता पूजा, रोकर किसे दिखाये ?

जन्म-जन्म से भटक रहा हूँ, कैसे तुमको पायें।

तुझे निहारे डूब रहे हैं, जीवन तुम बिन जाये।

*क्षमा मांगते समझ न कुछ भी, प्यासा जीवन जाये।*64

कल क्या होगा न जान सके, ना ईश तुम्हें पहचान सके।

रोए बहुत भटके भी बहुत, सारा जीवन हम गंवा चुके।

हम रहे खोजते सदा तुझे, न दिशा मिली हमको ईश्वर।

तुम हुए हाय मुझ पर निष्ठुर, आंसू बहते मेरे झर-झर।

तुम हमें निहारो करुणा से, कितने बेबस लाचार यहाँ।

जग के कर्ता तुम छिपे कहाँ, पूजे तुमको दे पता कहाँ।

अंखियां रोई तुम न आये, क्या तुमने खेल रचाया है।

सूनी बगिया ना ूल खिले, देखो बसन्त शर्माया है।

तुम क्षमा करना देव मेरे, इस दुनिया में हम भटक गये।

निज मजबूरी का रोना ले, सृजन करते है स्वांग नये।

तुझसे न हटे अंखियां मेरी, ऐसा साहस मुझमें भर दे।

गगरी यह डूबी जाती है, अन्तिम वर तू यह ही दे दे।

65

सजे यहाँ चाहत के मेले, भीड़ में हम हैं अकेले।

हम झांकते ही रि रहे हैं, प्यार के दो बोल बोले।

सब बीतता ही जा रहा है, ज्वार यह तो ना थमा है।

देखो यह दो पल की दुनिया, रि न जाने हम कहाँ है ?

सूर्य धारती चन्द्रमा सब, ;ण यहाँ अपना चुकाते।

हम बैठकर एकान्त में क्यों, अश्रु को ना रोक पाते।

ंस कर जगत के चक्र में मैं, हूँ तुम्हें मैं क्यों विसरता।

यह चाह थी मैं गीत गाता, तुम्हें मैं अपना बनाता।

तुम देख लो हम तो अबल है, नीर की तुमको कसम है।

हम तो भटकते रह गये हैं, यह कलेजे ही जलन है।

कैसे पाये हम तुम्हें प्रभु, सामर्थ अपनी नहीं है।

*डूबती यहाँ जाती नौका, देख लो हम ना बली है।*66

सुख खोज रहा है यह मनुआ, इस जग के जर्रे-जर्रे में।

हो अपनों से यह बेगाना, रोता चाहत के धुएं में।

कैसी यह डगर यहाँ मिलते, फिर खो जाते अनजाने में।

आँखों के मोती लुट जाते, बढ़ता है दर्द कलेजे में।

बरसी आंखे ना प्यास बुझी, क्या प्यास लिये मय खाने में।

अन्धाी गलियों में भटक रहे, विश्राम मिले इस आंगन में।

पाये कैसे ना विधाा पता, बस रोकर ही रह जाते है।

बुन आशा के ताने बाने, यह जीवन पूरा करते हैं।

ना आस मिटी ना तुम्हीं मिले, यह जीवन सारा बीत गया।

रोए नयना ना प्यास मिटी, सब खेल हमारा बिगड़ गया।

कुछ करो इशारे हम पायें, तुझको पा बस हम खो जायें।

स्वीकार करो आंसू मेरे, हम सबल नहीं तुझको पाये।

67

अपनी-अपनी चाहत सबकी, लेकर उसे उड़े है मनुआ।

किसको किससे मतलब जग में, पोंछो आंसू अपने मनुआ।

बनते यहाँ महल मिटने को, मिटने से क्या घबराना है।

जीवन जी ले खूब देख ले, यहाँ नहीं कुछ रह जाना है।

तड़प रही हर आंख प्यार को, बिन उसके वह खूब बरसती।

जग की इन सुन्दर गलियों में, निशदिन वह है खूब भटकती।

मेरे नाविक भुला मुझे सब, इस सागर से पार लगा दे।

रोती आँखियां बीच भंवर में, मेरे सब संताप मिटा दे।

चले यहाँ ना चलना आया, मिटी यहाँ जीवन की छाया।

बता संभालू निज को कैसे, देता धोखा अपना साया।

देव क्षमा कर देना हमको, तुझसे विनती यही कर रहे।

*घूम रहे अनजान जगत में, चले कहाँ से कहाँ जा रहे।*68

हम है अबल-सबल तुम स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।

जीवन के दो पल जो पाये, करे अर्चना तेरी स्वामी।

बहती नदिया नहीं किनारा, चल-चल कर हे प्रभु जी हारा।

ज्ञान दीप दे पथ दर्शा दो, वंचित ना कर तू है प्यारा।

फूल खिले तेरी बगिया में, वह खिल-खिल कर क्या कथा कहें ?

ना जान सके हम अज्ञानी, आंखों का मोती सदा बहे।

अपनी शरण में ले लो राम, बिन तुझ सब कुछ है बेकार।

प्यासा कण्ठ अमी बरसा दो, चला रहा तू ही संसार।

आँखियां थकी नहीं तू आया, कर प्रपंच जग में भरमाया।

तुझ बिन जियरा यहाँ न लागे, कृपा करो मैं हूँ शर्माया।

दो दीपक नयनों के जलते, करे प्रतीक्षा फिर यह रोते।

टेढ़ी जीवन की राहो पर, यह ही है बस कुछ सुख देते।

69

चल उड़ चल उस पार गगन के, अंसुअन गिरते इन नयनों के।

खे दे मेरे नाविक नैया, हारा मैं कोशिश कर कर के।

रही अर्चना यहाँ अधूरी, कर न सकूं जीवन में पूरी।

अबल जान अपना लो प्रभु, देता क्यों ना यह मंजूरी।

ऊसर जमी ग्रसल न उपजे, नीरस हृदय न रस वर्षाये।

कैसे डूबू तुझमें स्वामी, ग्रसल उगे तुझमें खो जाये।

पंथ निहारुँ तू नहीं आवे, आँख मिचौनी खेल खिलावे।

प्यास जगा दे मेरे प्रभु जी, इसी प्यास में हम मिट जावे।

तेरी बतियां मन को भावे, और नाहिं कछु मोहि सुहावे।

दूर करो ना मोहि ईश्वर, हरपल तेरा धयान लगावे।

बना बावरा नचा सांवरा, अपनी सुधि-बुधि मैं विसराऊँ।

*दो पल के जीवन में प्रियतम, तुझसे विलग नहीं हो पाऊँ।*70

तड़प रहे देखे ना बोले, कैसी प्रीति निभाई प्यारे ?

जीवन का हर गीत बेसुरा, बता तुझको कैसे पुकारें ?

कितना रोया नहीं पसीजा, पत्थर ऐसा क्यों बन बैठा ?

लुटते रहे आंख के मोती, करम हमारा ऐसा रुठा।

प्यास लिये क्या यहाँ जी रहे, तू ही विमुख हुआ जब मुझसे।

तरस गये पर तुम न आये, बन कर मेघ नहीं क्यों बरसे ?

करो कृपा मेरे ईश्वर, अपने चरणों की रज दे दो।

महके यह जीवन की बगिया, इस वन्शी को तुम स्वर दे दो।

अगम अगोचर सृष्टि रचैया, साहस दो खे लें यह नैया।

हम हारे हैं, तुम्हीं उबारो, डूब रही यह मेरी नैया।

सुमरन के बिन है ठौर कहाँ, चहुँ ओर दीखता पानी है।

जपते-जपते निज को छोड़ा, तू ही जाने क्या ठानी है ?

बहते आंसू देख हमारे, रुठो ना तुम प्रभु जी प्यारे।

तुम्हें छोड़ कर कहाँ जायें, नहीं ठौर प्रभु जी हम हारे।

दर्शन दो मैं योग्य नहीं हूँ, बरसे नैना प्यास जगा दे।

डूब जाऊँ इस ही गंगा में, प्रभु मुझको बस यह ही वर दे।

करो कृपा प्रभु है अबोधा, डगमग-डगमग पग होते है।

नहीं रुके बस चलते जाये, तुझ बिन सांसों को खोते है।

आये यहाँ न कुछ भी जानू, कैसे मैं निज को पहचानूं ?

ज्योति पुंज तू ज्योति जला दे, जीवन का मैं मर्म न जानूं।

नमन को स्वीकार करो प्रभु, रो-रो कर हम यही कह रहे।

दो पल का जीवन है यह तो, यह दर्द संग नहीं कहीं रहे।

तुम रुठो मैं किस पर रुंठू, यह तन ना मेरा अपना है।

*आँख उठा कर लख तो लेना, जीवन जाता यह सपना है।*72

सब सोवें मो नींद न आवे, ईश्वर मो काहे सतावे ?

पाव पडू मैं कुछ न जानू, झर-झर नयना आंसू आवे।

बीत गये पल कुछ पल बाकी, काहे को अब देर लगावे ?

चरणों को छू मिट जाने दो, जीवन में कछु रास न आवे।

बहे यहाँ न कोई किनारा, चल-चल कर हे प्रभु जी हारा।

विनती मेरी तुम सुन ली जो, ना हमें है कोई सहारा।

भटका बहुत न तुझको पाया, चीखा बहुत यहाँ चिल्लाया।

स्वर मेरे मुझ तक न पहुंचे, घुटा यहाँ खुल रो ना पाया।

आंसू की बरसात बरसती, धाक-धाक मेरी छतियां करती।

कबहुँ मिलोगे हे मनमोहन, देख लो मुझको कुछ न कहती।

मान दिया जो था ना काबिल, करी शिकायत तुझे न पाया।

बंधाा कर्म के बंधान में मैं, इन सबसे मैं छूट न पाया।

73

कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे, हुई अभागिन तुम बिन प्यारे।

कंठ मेरा अवरु) हुआ है, बता मुझे अब कौन उबारे ?

टूटी आशा घिरी निराशा, अँधियारे में मन डोले है।

कैसे पाऊँ तुझको प्रियतम, नीर गिरे कुछ न दीखे है।

अँखियों से बरसात बरसती, पल-पल तुझको याद करें हम।

सूनी आँखें खोजे तुमको, कैसे हैं ;रियाद करें हम।

बीत गई यह सारी उमरिया, पाऊँगा क्या तुम्हें संवरिया ?

इस दो पल के जीवन में भी, खोया तुमको टूटी गगरिया।

तरसी आँखे तुम्हें न पाया, जीवन हैं निज से शर्माया।

जबसे बिछुड़े तुम हो प्रियतम, रुठा है अपना ही साया।

कैसे भव को पार करेंगे, चलन न जानू मैं इस पथ की।

*लख लो हमें चाह यह मन की, सुधि है हमें नहीं अब तन की।*74

कितना चले मगर ना पहुँचे, जाती ले धाारा हमको।

सुन न सके धाारा की सरगम, यह क्या कहती है हमको।

चलो यहाँ चलना मजबूरी, बहो बह कर ले सबूरी।

मुक्ति ना है यहाँ कोई भी, जानो तो करो सबूरी।

सपनों के हम जाल बुन रहे, उलझते रहे निशदिन ही।

पल दो पल को मुक्त हुए ना, बने विवश रोए हम ही।

क्यों बन्धान में बंधो हुए हैं, छिपी मुक्ति की अभिलाषा।

कितना टूटे हाय जगत में, मिटी न मन की यह आशा।

पकड़ यहाँ क्या कूल छूटते, अपना क्या है गा जग में।

नहीं यहाँ पर जोर हमारा, जान मुक्त बह ले मग में।

धयान कर उस ईश्वर का ही, जो अनजान हुआ हमसे।

हम भटक रहे रोए नयना, ईश मिलोगे कब हमसे ?

75

सबको मिलता है नहीं श्रोत, इस ऊबड़ खाबड़ धारती में।

कितने ही बीज नष्ट होते, चाहत पर रुकें नहीं मग में।

यह अश्रु मांगती है धारती, तू पिला इसे अँखियां रोती।

अपनी चलती है नहीं यहाँ, अनजान डगर नैया बहती।

कितने बुनते ताने-बाने, ःस सदा बिलखते आये हम।

दो शब्द प्रेम के पा न सके, अब शाम हुई सोयेंगे हम।

हैं कदम डगमगाते चलते, फ़िर भी हम चलते जाते है।

हम कहाँ गिरेंगे पता नहीं, अँखियों से आंसू गिरते है।

ऐसा क्या मेरा ;ण बाकी, जो चुका नहीं मैं पाता हूँ।

कर्मों के बन्धान में बंधाकर, ना ईश तुम्हें लख पाता हूँ।

यह दीप बुझा जाता मेरा, चाहे सम्भालो ठुकरा दो।

*न भूल सकें तुमको ईश्वर, इतना ही वर मुझको दे दो।*76

मन्द बुि) अज्ञानी हम हैं, कैसे बेड़ा पार करोगे ?

जीवन का सौन्दर्य खो गया, कैसे तुम श्रृंगार करोगे ?

सबल एक बस तुम्हीं लगते, फ़िर भी हमें नहीं तुम दिखते।

इस होनी को गले लगाये, जीवन भर हम रोते रहते।

तूने भी मुझसे मुख मोड़ा, जीवन भी है यह बस थोड़ा।

अश्रु को स्वीकार करो तुम, कर अनाथ क्यों मुझको छोड़ा।

एक शूल हो कहे यहाँ पर, तन शूलों से विंधाा हुआ है।

प्रभु जी तुम मेरी सुधि ले लो, क्यों शिकवा यह हाय हुआ है।

आँखें देखे तू ना आवे, ना बसन्त जीवन में आवे।

जग की अंधियारी गलियों में, सब प्रकाश तू ही फैलावे।

नहीं कृपा तेरी सब सूना, हरपल बस पड़ता है रोना।

राम रखो अपनी शरणागत, यह जीवन हो जाये सोना।

77

किसके आगे व्यथा सुनायें, इन नयनों में आंसू आये।

पत्थर सा दिल लेकर बैठे, बता पिघल यह कैसे जाये।

पल-पल आशा में जीते हैं, लखे नहीं वह तो सोते हैं।

ऐसा निष्ठुर हुआ हाय वह, हम हरपल रोते रहते हैं।

दीप बुझा सदिया बीती हैं, मैं एक किरन को तरस गया।

कब तक मैं भटकूंगा प्रभु जी, जीवन सारा यह बीत गया।

ढूंढ रहा मैं नजर न आते, कैसा हमको खेल खिलाते ?

विरह अग्नि में जलूँ रात दिन, आँखों में आंसू वर्षाते।

इन मोती से आंसू लेकर, जीना चाहूँ सुधि विसरा कर।

इनको भी तुम छीन न लेना, डर लगता है हे करुणाकर।

जग वैभव से टूट गया रस, तेरे वैभव को ना पाया।

*हाय अभागा हुआ जगत में, पीड़ा तुझे सुना ना पाया।*78

रुक मत समझ यहाँ बहता जा, तू है विवश यहाँ चलता जा।

कूल अनेकों आ छूटेंगे, मुक्त भाव से तू बहता जा।

पकड़ों कोई हाथ न आवे, काहे अपना जिया जलावे।

सबके अपने अपने सपने, पड़ उसमें क्यों चित्त दुखावे।

बह बस तुझको बहना होगा, रुका यहाँ तो रोना होगा।

पीछे से भी लहर आ रही, उसको भी मग देना होगा।

कितनी लहरें बही जा रही, पता नहीं मन्जिल भी क्या है ?

गति में सागर लख ना पाती, जान न पाती किस्मत क्या है।

चाह मुक्ति की कहाँ मुक्ति है, छोड़ स्वयं बह यही मुक्ति है।

लहर बनी है पूछा किसने, मिटने से क्यों हाय डरी है ?

अन्तस देख सगर है सारा, फिर भी कांपे मनुआ हारा।

हमें सिखा दे अज्ञानी हम, बहे रजा में तुही हमारा।

79

तुम विमुख हुए हम टूट गये, अपनी दुनिया में भूल गये।

हम भुला नहीं तुमको पाये, इन नयनों में आंसू आये।

तू बता पुकारें हम कैसे, इन ऊबड़-खाबड़ रस्तों में।

डर हमको हर पल लगता है, क्या नहीं मिलोगे जीवन में।

मन्दिर मस्जिद में भी खोजा, गुरुद्वारे शीश नवाया है।

गिरजाघर में भी जा झांका, क्यों फिर भी तू न आया है।

जलते हर पल जल जायेंगे, क्या तुमको हम ना पायेंगे।

निष्ठुर ऐसे नहीं बनो तुम, अब तुम बिन न रह पायेंगे।

तुम रुठ गये किससे रुंठू, ना मुझे मनाता कोई है।

ऐसा दीपक भी क्या दीपक, न शलभ कोई भी आता है।

स्वीकार करो आंसू मेरे, अब चरणों को छू लेने दे।

*इस जीवन की मिट जाये तपस, गिर चरणों में रो लेने दे।*80

कितना ही नाम जपेंगे, क्या छूटेंगे हम कर्मों से ?

हुए विवश बहते जग में हैं, आंसू बहते इन नयनों से।

समझाऊँ इस मन को कैसे, तुम छिपे मोहि न दीखे।

उलझ-उलझ कर गिरुँ जगत में, तुम बिन मग मोहि नाहि दीखे।

स्वीकार करो मुझको हे प्रभु, अज्ञानी दिशाहीन बहते।

आखिर क्या दोष हमारा है, निशदिन हम चोटों को सहते।

बस जाओ तुम खो जाये हम, चाहत के तार सभी टूटे।

खोया बसन्त आया पतझड़, ईश्वर क्यों तुम मुझसे रुठे ?

पापों की लिये गठरिया हैं, निज उसमें हम दबते जाते।

सूनी आँखें खोजे मग को, पर निकल नहीं उससे पाते।

हे ईश हमें तुम पथ दे दो, क्या दोष हमारा पता नहीं।

तेरी चौखठ पर गिर जायें, है चाह यही फिर उठे नहीं।

81

किसको पकड़े किसको छोड़े, हाथ नहीं कोई आता है।

नभ में कितने रंग बिखरते, कौन-कौन सा मन भाता है।

देख-देख बह जाने दे सब, हर पल यहाँ बदलती दुनिया।

बन वैरागी जी ले जग में, बनती मिटती हैं सब कड़िया।

इन नयनों में स्वप्न संजोये, हरपल हम बढ़ते जाते हैं।
प्यासे मन की प्यास बुझाने, विष की घूट पिया करते हैं।

प्रेम गीत गा सुने यहाँ हम, सृष्टि घूमती दो शब्दों में।

भय से क्यों सिकुडे जाते है, आंसू गिरते इन नयनों में।

हम है अबल-सबल तुम स्वामी, घट-घट के हो अन्तर्यामी।

अपना दास बना लो प्रभु जी, ना हो जीवन की बदनामी।

हाय विवशता की ज्वाला में, निज को कैसे पार करेंगे ?

*नीर बह रहा इन नयनों से, प्रभु जी तुम स्वीकार करोगे।*82

टप-टप गिरे नयन से आंसू, जीवन कैसे हाय तरासूं ?

तेरी यादों में खो जायें, इस जग में ना निज को ꠰ंसू।

डगमग नौका बही जा रही, किसी भंवर में खो जायेगी।

तुझसे नहीं मिले यह नयना, दन्श हाय यह ले जायेगी।

क्षमा मांगता हरपल तुझसे, तुझ पथ पर मुझको बढ़ने दो।

बसे रहो मेरे नयनों में, हे ईश्वर तुम मुझको वर दो।

तुझे खोजते खो जाये हम, अपनी सुधि को विसराये हम।

शलभ पतंगा प्रीति पुरानी, इसी प्रीति को दुहराये हम।

प्रीति मेरी न बुझने देना, चाहे जीवन को ले लेना।

थककर आन पड़ा चौखठ पर, हे ईश्वर न ठुकरा देना।

कहने को कुछ शब्द नहीं है, रिझा सकूं वह कंठ नहीं है।

करुँ अर्चना विधि से वंचित, कृपा करो बस अर्ज यही है।

अपनी-अपनी लिये कहानी, सब ही जीते हैं इस जग में।

जान पाया कोई यहाँ पर, ꠰टते बादल क्यों खुशियों में ?

हुआ समर्पित बहा जा रहा, दिशाहीन नौका बहती है।

मुझे संभालो मेरे ईश्वर, निशदिन यह अंखिया रोती है।

समझ सके न समझ हमारी, अज्ञानी बन घूमे जग में।

कर्मजाल में ꠰ंसा हुआ मैं, झांकू बस तेरी आँखों में।

इस मन को कैसे समझाऊँ, रुठ गये क्यों ईश्वर मेरे ?

नीर नहीं आँखों का सूखे, कैसे है दुनियाँ के घेरे ?

जीवन का सन्ताप मिटा दो, निज चरणों में मुझे बसा लो।

भूल भुलैया में थक हारा, रुठो ना मेरी सुधि प्रभु लो।

;षी-मुनी सब धयान करे हैं, सब तेरा गुणगान करे हैं।

खड़ा एकाकी रोकर देखूँ, क्यों तुझसे हम दूर हुए 84

लगता नहीं यह दिल, अब जाये कहाँ यह मन।

पैरों में न घुंघरु, स्वर कैसे बजे छन-छन।

स्वप्न तेरे सुन्दर, बिन तेरे कटे न रूर।

ले ले यादे यहाँ, आंसू भी गिरें झर-झर।

यादें पुरानी है, कहती जो कहानी हैं।

न भूल सके तुमको, जग मानते ानी है।

कैसे कटे रैना, आतुर हैं सुने बैना।

बैचेन आहट को, दूभर यह हुआ जीना।

पंथ तेरा निहारें, जाता भी नहीं यह दम।

रोऊँ तुम्हारे बिन, निशदिन ही सताये गम।

आ कर मिलो मुझसे, विनती को तुम्हीं सुनना।

नैना मिलाये हैं, मत ेर यह अब लेना।

85

खोज रहे क्या बने बाबले, हम इस धारती के आंगन में।

नीर नहीं अंखियों से सूखे, बने बाबले इस दुनिया में।

तेरे पग की धूलि मिली ना, जगत धूलि से तृप्ति हुई ना।

कैसे समझाऊँ इस मन को, हारी अंखियां तुम आये ना।

जीवन बीता घट है रीता, छलक सका ना अमी तुम्हारा।

मुझे न भूलो मेरे ईश्वर, जनम-जनम से दास तुम्हारा।

कर्मों के बन्धान में बंधाकर, नित इसमें उलझे जाते है।

मुझे उबारो हे जगदीश्वर, राह नहीं कोई पाते है।

लगी विरह की आग न आये, धीरज मन को कौन बंधाये ?

पाव पड़ूं नहीं मुझसे रुठो, तकूं राह तुम क्यों ना आये ?

मेरे आंसू तुझ तक पहुँचे, मुझको पलक उठा कर देखो।

*यही विनय मेरी तुम सुन लो, अज्ञानी करनी ना परखो।*86

हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, अंखियाँ हरपल नीर बहावें।

इस जगत को तूही चलावे, मो को तू अब मत उलझावे।

तेरे निशदिन हम गुण गावे, तुझसे ही बस प्रीति लगावे।

टूट गई सब मेरी आशा, तुझसे ही बस आस लगावे।

रुठ न मुझसे चरण पड़ा मैं, गीतों को हरपल गाऊँ मैं।

और रखा क्या इस जीने में, याद तुझे कर सुख पाऊँ मैं।

राम-राम की धुन न छूटे, झरना यह इस हिय में ूटे।

रहूँ डूबता इसमें हरपल, जीवन के सब बन्धान टूटे।

तुम्हीं उबारों अब सुधि ले लो, राम हृदय में अंकित कर दो।

जलूं शलभ सा राम-राम में, हे ईश्वर तुम इतना कर दो।

डोलूं चहुँ दिश बरसे नैना, बीते पतझड़ आये चैना।

नाम तेरा जाये विसर ना, मेरी यह विनती सुन लेना।

87

हरि तुम छोड़ कहाँ पर जाऊँ, राखो शरण तुम्हारी आऊँ।

तुम बिन यह बैचेन हुआ दिल, राह निहारुँ नीर बहाऊँ।

बिन कृपा दुख है जीवन में, याद करुँ मैं तुमको हरपल।

रुठो ना तुम मेरे ईश्वर, तड़ू जैसे मछली बिन जल।

है मेरी सामर्थ नहीं कुछ, लहरों सा मैं बहता जाऊँ।

तू सम्हाले पर ना जानूं, तेरी लीला समझ न पाऊँ।

जन्म-जन्म से भटक रहा हूँ, पाया ना मैं तड़ रहा हूँ।

कैसे मिलूं वन्शी वजैया, धुन सुनने को तरस रहा हूँ।

पथ ना दीखे नीर भरे है, इस दुनिया में सदा जले है।

ऐसा भी क्या खेल हुआ है, तुम न पसीजे हम रोते है।

तुमको याद करुँ सुख पाऊँ, इस व्रत को मैं गले लगाऊँ।

*जपते-जपते नाम तुम्हारा, इस जग से प्रभु मैं खो जाऊँ।*88

हे ईश क्षमा करना हमको, अज्ञानी बन कर घूम रहे।

तेरी करुणा को पाने को, दिन-रात नयन यह तरस रहे।

तुम बिन लगता जीवन नीरस, बस जाओ रस हिय बरस रहे।

सब चाह मिटे मन कष्ट मिटे, सुख की नदिया में सदा बहें।

स्वीकार करो भूलो न हमें, अंखियों से झरझर नीर बहे।

मुरझाया जीवन खिले यहाँ, इसकी सुगन्धा सब दिशा बहे।

टप-टप आंसू गिरते रहते, नित विरह कथा कहते रहते।

इस शून्य व्योम में देख रहे, मिलते हमको जी भर रोते।

ना चैन मिला इस जीवन में, हम सदा तरसते रहे तुझे।

सावन आया और चला गया, ना शमा जली हम रहे बुझे।

अपना तुम दास बना लो प्रभु, रो-रो कर यह नयना कहते।

जन्मों से मैं हूँ भटक रहा, खिल जाये जीवन हिय बसते।

89

प्रभु मैं भटकता फिर रहा हूँ, ज्ञान का दीपक जला दो।

प्रभु प्यार से अपना बना लो, जिन्दगी ईश्वर सजा दो।

चहुँ ओर जल ही जल भरा है, नहिं किनारा दीखता है।

प्रभु कृपा हो जाये तेरी, हो कठिन मग दीखता है।

खाती यह हिचकोले नौका, पार यह कैसे करेगी।

देना ईश्वर तुम सहारा, नहीं यह अंखिया झरेंगी।

प्रभु तुम बिना कुछ सुख यहाँ ना, हम गिर पड़े है द्वार पर।

हारा थका सामर्थ कुछ ना, दे दे सहारा ना न कर।

भटका बहुत ना नीर सूखा, हैं अश्रु से पूरित नयन।

मेरे प्रभु करुणा के सागर, यदि तुम मिलो होऊं मगन।

तू डूबती किस्ती बचा दे, मुश्किलों ने आन घेरा।

ईश्वर विरह में दिल हमारा, सब जगह है राज तेरा।

88

हे ईश क्षमा करना हमको, अज्ञानी बन कर घूम रहे।

तेरी करुणा को पाने को, दिन-रात नयन यह तरस रहे।

तुम बिन लगता जीवन नीरस, बस जाओ रस हिय बरस रहे।

सब चाह मिटे मन कष्ट मिटे, सुख की नदिया में सदा बहें।

स्वीकार करो भूलो न हमें, अखियों से झरझर नीर बहे।

मुरझाया जीवन खिले यहाँ, इसकी सुगन्धा सब दिशा बहे।

टप-टप आंसू गिरते रहते, नित विरह कथा कहते रहते।

इस शून्य व्योम में देख रहे, मिलते हमको जी भर रोते।

ना चैन मिला इस जीवन में, हम सदा तरसते रहे तुझे।

सावन आया और चला गया, ना शमा जली हम रहे बुझे।

अपना तुम दास बना लो प्रभु, रो-रो कर यह नयना कहते।

जन्मों से मैं हूँ भटक रहा, खिल जाये जीवन हिय बसते।

89

प्रभु मैं भटकता फिर रहा हूँ, ज्ञान का दीपक जला दो।

प्रभु प्यार से अपना बना लो, जिन्दगी ईश्वर सजा दो।

चहुँ ओर जल ही जल भरा है, नहिं किनारा दीखता है।

प्रभु कृपा हो जाये तेरी, हो कठिन मग दीखता है।

खाती यह हिचकोले नौका, पार यह कैसे करेगी।

देना ईश्वर तुम सहारा, नहीं यह अंखिया झरेंगी।

प्रभु तुम बिना कुछ सुख यहाँ ना, हम गिर पड़े है द्वार पर।

हारा थका सामर्थ कुछ ना, दे दे सहारा ना न कर।

भटका बहुत ना नीर सूखा, हैं अश्रु से पूरित नयन।

मेरे प्रभु करुणा के सागर, यदि तुम मिलो होऊं मगन।

तू डूबती किस्ती बचा दे, मुश्किलों ने आन घेरा।

*ईश्वर विरह में दिल हमारा, सब जगह है राज तेरा।*90

जन्म दिया तूने हमको जो, तेरे दरवाजे पर आये।

आंसू की कीमत ना जग में, टूट-टूट कर हैं रोए।

दिशा खोजता खोज रहा हूँ, मिल जायेगी कभी दिशा।

चलते-चलते नहीं मिली तो, प्यारी होगी हमे निशा।

आशा लेकर बार-बार मैं, दरवाजे पर आया हूँ।

हुआ भिखारी जन्मजात हूँ, नया नहीं कुछ करता हूँ।

मेरी मांगों से मत रुठो, करुणामय ईश्वर है।

माँग-माँग कर तुझे रिझाये, बता नहीं क्या सुन्दर है ?

ना मांगेंगे तू रो देगा, दर्द समझ ना आयेगा।

हम अबोधा बालक है तेरे, कैसे मन बहलायेगा ?

कट जायेगा युंही सफर यह, उस पार खड़ा देख रहा।

स्वीकार करो मेरे आंसू, यही अर्धा मैं चढ़ा रहा।

शक्तिमान हो इस दुनिया में, हम बस बोले जय मेरी माँ।

मुझे भुला कर कहाँ खो गई, मेरे आँसू देखो हे माँ।

विरह हमें दिन रात सतावे, अखियां रोवे नींद न आवे।

हरपल देखूं राह तुम्हारी, अब न मुझको तू तड़ावे।

मात-पिता गुरु स्वामी तुम हो, घट-घट की अन्तर्यामी हो।

तुझको छोड़ कहाँ हम जायें, मेरे जीवन की कर्ता हो।

मेरी नौका डूब रही है, इसको तू अब पार लगा दे।

बीच भंवर में फंसी हुई है, मुझको तू अपनी करुणा दे।

ज्ञान-धयान हम कुछ न जाने, यह आंखियां बस रोना जाने।

तेरी ओर निहार रही है, और नहीं कुछ विधिा को जाने।

विविधा रुप है यहाँ तुम्हारे, तुमको माँ में ही पहचाने।

*व्याकुल मैं तेरी ममता का, बस तू ही मुझको पहचाने।*92

मन्दिर मस्जिद गिरजा ढूंढा, तुम बिन मेरा जीवन सूना।

हे ईश्वर तुम छिपे कहाँ हो, महके बगिया तुम आओ ना।

तुझसे ईश्वर नैन मिलाऊँ, जीवन की सब निधाी लुटाऊँ।

तुझ चरणों में गिर रोऊँ मैं, अन्तिम वर बस कुछ न चाहूँ।

दन्श लगे मुझको जीवन में, चल-चल गिरे हाय हम मग में।

जपते तेरा नाम रहे हम, है अज्ञानी गुण ना हम में।

अश्रु देख लो या ठुकरा दो, कुछ भी नहीं हमारे बस में।

मुझे बना लो अपना चाकर, हार गया हूँ हे हरि अब मैं।

झरते नीर यहाँ लख लेना, बालक जान क्षमा कर देना।

बीत गये पल बीतेंगे यह, रुठ कभी मत मुझसे जाना।

सर्जक जीवन के प्रभु तुम हो, कैसे पूजा करुँ तुम्हारी ?

हरपल संग मेरे रहते हो, जानूं कुछ ना रहा भिखारी।

93

हरि अब चरण पड़ूं मैं तेरे, मिटा जिन्दगी के सब घेरे।

छोड़ तुझे अब मैं कित जाऊँ, अंखियां बरसे सांझ सवेरे।

सांस-सांस में बसा हुआ तू, फिर भी मैं क्यों डरा हुआ हूँ।

लक्ष्यहीन यह नौका बहती, कित खोये हो ना जानू हूँ।

तुझसे प्रेम बढ़े बीते पल, नहीं भरोसा क्या होगा कल।

सुपने तैर रहे आंखों में, इनसे दुख पाया है हरपल।

तुझसे प्रीत बढ़े सुख पाऊँ, जीवन के सब दन्श मिटाऊँ।

इस दो पल के जीवन को ले, तेरी यादों में खो जाऊँ।

चाहत सबकी अलग-अलग है, मारग सबके अलग-अलग है।

कितनी नदियां बही जा रही, सागर में सब लय होती है।

*तुझे भूल कर मैं दुख पाऊँ, सुमरण में बस मैं सुख पाऊँ।*94

विनती सुन लो हरि तुम प्यारे, तुम देखो तो जीवन सुधारे।

और न जानू तुझें पुकारुँ, कारज तुम बिन बिगड़े हमरे।

मात-पिता गुरु स्वामी सखा, जीवन के सुखदायक तुम हो।

करें आरती प्रभु जी तेरी, घट-घट के अन्तर्यामी हो।

निशदिन तेरा सुमरण करके, जीवन नौका पार करें हम।

अपनी दया बनाये रखना, करुणा सागर कहलाते तुम।

कागज के हम पंख लगाकर, इस अकाश में घूम रहे हैं।

दंश यहाँ हम सह ना पाते, झर-झर आंसू गिरा रहे हैं।

इस जग में आनन्द मनावे, तेरी किरपा यदि हम पावे।

इस दुख के दरिया में बहते, तुम बिन कोई ठौर न पावें।

अंखियों में बस जाओ प्रभु तुम, सुपनों में भी आओ प्रभु तुम।

हरक्षण बसे रहो घट अन्दर, विलग न होना कभी नहीं तुम।

95

चरण पड़ूं मैं दास तुम्हारा, हे प्रभु मुझको राह दिखाओ।

भटक रहा अज्ञानी हूँ मैं, हरि तुम मुझको अब मिल जाओ।

निष्ठुर बनकर ना प्रभु बैठो, अंखियां देखती राह तेरी।

अपनी दया मुझे दिखलाओ, भीगी मेरी पलकें सारी।

सदियां बीत गई ना आये, हिया जलन को कौन मिटाये।

बिन जल तड़े मछली जैसे, यह मेरा जियरा घबराये।

अन्धाकार से ढकी चदरिया, देखूं पर नहिं मिले संवरिया।

ज्योतिपुंज तुम दीप जला दो, मिले प्रभु हरि तेरी डगरिया।

*झर-झर नीर गिरे दर्शन दो, मुझको जी भर कर लखने दो।*96

मेरे राम तुझको ही जपे, संसार के सब दुख मिटें।

तुम अर्चना स्वीकार कर लो, यही पल खुशियों में कटे।

नदियां यहाँ पर बह रही हैं, जायेगी कहाँ ले हमें।

हम ढूंढते ही हरि रहे हैं, प्यार से देखो हमें।

मेरे देवता तुम बने हो, कैसे हम तुझे मनायें।

चलता नहीं जोर कुछ भी, नीर हरपल हम बहायें।

तुम्हारी दुनिया है अनोखी, ूल इत नित खिल रहे हैं।

नहिं हम यहाँ पर दर्द भी है, नीर भी झर-झर झरे हैं।

प्रभु नाम तेरा ही सहारा, हम मना दिल को रहे हैं।

जो नीर मेरे बह रहे है, इसे खुशियां दे रहे हैं।

इस नाम में तेरे छिपा सब, नाचता ब्रह्माण्ड यह सब।

थोड़ी हमें मुस्कान दे दे, मिट रहा है सब यहाँ रब।

97

जय हो ईश सदा तुम्हारी, चाहे दया सभी नर नारी।

इस जग के पालक प्रभु तुम हो, तुम स्वामी हम सभी भिखारी।

अन्धाकार से पीड़ित है प्रभु, अन्तस मेरे करो उजाला।

रोती फिरती हैं यह आंखे, मिटा मुझे इस गम ने डाला।

तुझे मनाऊँ कैसे मैं प्रभु, जीवन है यह हंसता मुझ पर।

किसलिये यहाँ हम आये थे, खोते जाते हैं सब अवसर।

गुणगान यहाँ करता है जग, यह मही नाचती बिना रुके।

न समझ सके अज्ञानी हम, तू छिपा कहाँ ना जान सके।

इंगित करते झड़ते पत्ते, थिर यहाँ नहीं कुछ जग सपना।

सब ओर राज तेरा ही है, सच तू है मैं तो हूँ ही ना।

स्वप्न संजोते हम इतने, पल-पल में वह टूटे जाते।

*भाग्य विधाता भाग्य लिखा, तड़े तुझको पर ना पाते।*98

यहाँ भजले मनुआ राम, हो रही है शाम।

सब छूट जायेगा यहाँ, बस संग राम-राम।

पहचान ले लहरें नहीं, साथ सागर राम।

कर्ता न बन जगत में तू, है वह राम-राम।

अन्तस में डूब राम मिल, बैठा राम-राम।

इस जग में घूमते यहाँ, तुमको भुला राम।

लहरों में हम भटक रहे, सागर साथ राम।

हे राम ना भूलें तुझें, बीत जाये शाम।

बुलबुले हैं तेरे राम, मैं का है न काम।

सहज चलें जपें तुझे ही, सब ओर है राम।

सागर से लहर यदि जुड़े, जान जाये राम।

अपना नहीं है बस यहाँ, बह रहा है राम।

99

हरि तुम राखो लाज हमारी, मेरी भीगी अँखियां सारी।

तुम बिन मनुआ चैन न पावे, जपते हमतो तुझे मुरारी।

बन्शी धुन सुन सुधा बुधा भूलूं, हिया हुआ है मेरा भारी।

रो-रो अंखियां सूज गई हैं, प्रभु इस जग से मैं हूँ हारी।

किसके आगे दर्द सुनावे, बैना मन नहीं कोई भावे।

लगी विरह की आग हृदय में, जियरा उसमें जल-जल जावे।

चलता जग में कहाँ खो गये, स्वर जीवन के सभी रो रहे।

तुही उबारे मेरे ईश्वर, तुम बिन चाहें यहाँ न रहे।

तुही खिवैया मेरे प्रभु जी, नौका मेरी पार लगा दो।

डूब रही है भंवर बीच में, इक छोटी सी झलक दिखा दो।

तुझ दर्शन बिन हुआ भिखारी, झोली खाली टूटे डाली।

*नयना तेरा पन्थ निहारें, मेरे जीवन का तू माली।*100

हरि मेरे हिय में बस जाओ, पांव पड़ूं ना अब तुम जाओ।

अन्धाकार को दूर भगा कर, ज्ञान दीप प्रभु तुम दर्शाओ।

सदा अर्चना करुँ तुम्हारी, पल भर को भी ना विसराऊँ।

पलको से मैं ढांप तुझे लूं, छोड़ मुझे ना मैं घबराऊँ।

पाप पुण्य मैं कुछ ना जानू, बस केवल मैं रोना जानूं।

अज्ञानी मैं कृपा करो तुम, और न कोई तुमको मानूं।

पार मुझे ले चल इस जग से, अंखियां रोए तुम बिन तरसे।

रुठो तुम न मेरे ईश्वर, बंजर धारती देखूं बरसे।

तेरी यादें हिया जलावे, और नहिं कुछ मोहि सुहावे।

बेदर्दी तुम बनो न ऐसे, ज्ञान नहीं कैसे हर्षावे।

सदियां बीत गई ना आये, तुम बिन दीपक कौन जलाये।

बीत रही यह जीवन घड़ियां, जिया बिन तेरे कुम्हलाये।

101

अर्चना तेरी करें हम, भटक इस जग में रहे।

अश्रु से पग धाो सके ना, नीर नहिं मेरे रहे।

इस जगत में तुही आशा, ले निराशा डूबता।

तर सकूँ चाहूँ दिलासा, द्वार तेरा ढूंढ़ता।

विनति को स्वीकार कर लो, अज्ञान को प्रभु हर लो।

आये पतझड़ में बहार, पीड़ हिय ईश सुन लो।

घूमते हैं इस जहाँ में, स्वप्न की दुनिया बना।

जुड़ न पाता भटक जाता, नहीं यह किस्मत बना।

न नजर कोई भी आये, जी चुराये न हमसे।

जी रहे इक आस पर ही, तुझ कृपा भी बरसे।

कन्टकों से मग भरा है, ूल भी यहाँ विखरे।

हर सांस तुझको समर्पित, हम सदा तुझे सुमरे।